क्रान्ति-कलश

गजेन्द्र सोलंकी

क्रान्ति-कलश

(काव्य-संग्रह)

अमृत प्रकाशन
1/5170, लेन नं. 8, बलबीर नगर
शाहदरा, दिल्ली-110032
दूरभाष : 22573468

क्रान्ति-कलश

(काव्य-संग्रह)

गजेन्द्र सोलंकी

अमृत प्रकाशन
दिल्ली-110032

ISBN 81-8280-016-1

क्रान्ति-कलश (काव्य-संग्रह)

प्रथम संस्करण : 2005

मूल्य : 125.00

प्रकाशक
अमृत प्रकाशन
1/5170, लेन नं. 8, बलबीर नगर,
शाहदरा, दिल्ली-110032
दूरभाष : 22573468

आवरण सज्जा
मनीश डागा
दूरभाष : 9868303600

मुद्रक
व्योमवर्ड्स
मंगलभवन, लेन नं. 8, बलबीर नगर,
शाहदरा, दिल्ली-110032

शब्द-संयोजन (हिन्दी)
विनायक कम्प्यूटर्स
दूरभाष : 9810554205

KRANTI-KALASH (Poetry)
by Gajendra Solanki — Rs. 125.00

- पूज्य अम्माँ श्रीमती देवकी देवी को, जिन्होंने मुझे जन्म दिया और जिनके संस्कार, संघर्ष-शक्ति व आत्म-विश्वास मेरे रक्त में प्रवाहित हैं

- ब्रह्मलीन पूज्य पिता श्री हरीचन्द सोलंकी को, जिन्होंने मुझे जीवन दिया व इस कृति को देखने से पूर्व ही स्मृति-शेष हो गए

- ब्रह्मलीन श्रद्धेय ताऊजी श्री बिहारी सिंह सोलंकी को, जिन्होंने बिना किसी फलेच्छा के शिक्षा व समाज से मेरा प्रथम परिचय कराया

क्रान्ति-कलश से छलछलाती ज्वालाएँ

अनेक वर्ष पहले की बात है, उत्तरी दिल्ली के एक कविसम्मेलन में अपना काव्य-पाठ करने के बाद धुआँधार तालियों से प्राप्त एक तृप्तिबोधसम्पन्न नवयुवक गजेन्द्र सोलंकी मेरे पास आकर बैठे। मैंने अभिभूत होते हुए कहा—"फायर है डियर, तुम्हारे अन्दर एक फायर है। मेरा मन करता है कि मैं तुम्हारा एम्प्लीफायर बन जाऊँ।" गजेन्द्र विनम्रता से मुस्करा दिए और काव्य-पाठ के श्रम के कारण मस्तक पर छलकते हुए पसीने को रूमाल से पोंछने लगे।

गजेन्द्र का मस्तक मुझे किसी क्रान्ति-कलश से कम नहीं लग रहा था। छलकता हुआ पसीना जल-तत्व नहीं था, अग्निस्वरूप था। नेत्रों से विचारों के शीतल स्फुलिंग झर रहे थे। मैंने गजेन्द्र की आँखों में झाँका। मेरी आँखें अपना कथन दोहरा रही थीं—"फायर है डियर! तुम्हारे अन्दर एक फायर है।"

फायर के अनेक प्रकार होते हैं—

एक फायर वह होती है जो किसी डकैत की बन्दूक से निकलती है और निरीहों के प्राण ले लेती है।

एक फायर वह हो सकती है, जिससे पुलिसवाला फर्जी मुठभेड़ में किसी मासूम निरपराध की जान ले लेता है।

एक फायर वह होती है, जो सीमा पर तैनात किसी सिपाही की बन्दूक से निकलती है और देश की सम्प्रभुता की रक्षा करती है।

एक फायर कुण्ठाजन्य होती है, जिसमें जलनेवाला अपनी ही आग से जल जाता है।

फायर और फायर में फर्क होता है।

एक फायर होती है रचनात्मकता की, जिसमें बन्दा खुद नहीं जलता बल्कि दुनिया जहान से बटोरे हुए अपने अनुभवों को उस रचनात्मकता की आग में तपाकर समाज को कुछ नया और सार्थक देने की कोशिश करता है। गजेन्द्र की इसी फायर, इसी आग को मैंने बरसों पहले चिन्हित किया था।

तब से अब तक गजेन्द्र की रचना-यात्रा के विकास को देखकर मैं कह सकता हूँ कि यह आग अब परिपक्व हो रही है, समग्र हो रही है। समग्र इस

अर्थ में उसमें किसी दुश्मन को, जैसा कि वीररस के कवि अक्सर पाकिस्तान में खोज लेते हैं, जलाने-भर का जज्बा नहीं है, उसमें जीवन-जगत से बटोरा हुआ अनुभव विद्यमान है।

वीररस के कवियों का काव्य-संसार प्रायः पाकिस्तान तक सिमटा रहता है। उसी को ख़ाक करने के चक्कर में वे अपनी आग को बहुत खोखले किस्म के झागों में तब्दील कर लेते है। कई बार इस आग में संवेदना की रोशनी कम और नफ़रत का धुआँ ज्यादा हो जाता है। ऐसी सूरत में आग वाला कवि, कवि कम, बहुत उथले झाग बेचनेवाला सेल्समैन अधिक हो जाता है।

समग्र रचनात्मक आग वह होती है, जिसका परिचय इस संकलन में पाठकों को मिलेगा, जिस आग में जीवन के तमाम रंगों का फाग हो, जीवन के तमाम अनुभवों में संवेदना का भाग हो, दुःख-सुख का राग हो और जिसमें सिर्फ गरमी ही न हो, अँधेरे को चीरकर आनेवाले उजाले, आनेवाली रोशनी का सुराग भी हो।

ओज और वीर रस के कवि अक्सर तात्कालीन गरमी वाली कविता को ही आग की कविता मान लेते हैं। परिणाम यह होता है कि उनकी रचनाओं में वह समग्रता नहीं आ पाती, जो किसी रचनाकार को परिपक्व बनाती है। मुझे गजेन्द्र की रचनाओं में वह बहुआयामी प्रौढ़ता बराबर दिखाई देती है, जब वह कहते हैं—

गंगा और यमुना, सरस्वती की धार मिले
तीरथ प्रयागराज में गोते लगाइए...
धोना चाहते हों यदि राजनीति के भी पाप
भ्रष्ट नेताओं को यहीं लाकर डुबाइए।

गजेन्द्र की पहचान अब मूलतः ओज के कवि के रूप में होती है, पर इस तरह की पंक्तियाँ बताती हैं कि ओज के स्वर के पीछे जीवन के कड़वे सत्यों की खोज भी चलती रहती है। भ्रष्टाचार हमारे जीवन की एक कड़वी सचाई है।

बलिदानों और बलिदानियों को नमन करते हुए वह लिखते हैं—

बलिदानी स्वरों की पुकारों को नमन मेरा
कोल्हुओं से बही तेल धारों को नमन है
क्रान्तिकारियों ने यहाँ लिखा वन्देमातरम्
सेल्युलर जेल की दीवारों को नमन है।

राजनीति जब सेल्युलर फोनों पर चलने वाले डील का कारोबार बन गई हो, तब उस दूसरी किस्म की सैल्युलर राजनीति की याद गजेन्द्र कराते हैं। यह याद कराना निश्चय ही सामयिक है। ओज का यह ऐसा स्वरूप है जो अब वीररस और ओज के रचनाकारों में लुप्त हो रहा है।

मैं अक्सर कहता हूँ कि राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति के क्षेत्र में दो किस्म की कविताएँ हो सकती हैं। एक कविता उत्तेजना की और दूसरी तेज की। नकारात्मक बात कहकर, तोड़ने की बात कहकर उत्तेजना बहुत आसानी से फैलाई जा सकती है। पर सकारात्मक तेज की बात करना बहुत मुश्किल काम है। गजेन्द्र इस काम को लगातार कर रहे हैं। यह इस संग्रह की उनकी रचनाओं को देखकर पता लगता है। समाज की विसंगतियों, वेदनाओं, असमानताओं और स्वार्थी तत्वों की लोलुपताओं को देखकर गजेन्द्र की चेतना का क्रान्ति-कलश छलकने लगता है। हृदय की वेदना बाहर निकलने को व्याकुल हो उठती है। वह चाँद-सितारों की चमक-दमक से बहलने को तैयार नहीं है, वह तो अन्तहीन घनघोर अँधेरे को हटाने के लिए नवयुग के स्वर्ण सवेरे से कम पर सहमत नहीं है। उसका मन क्रन्दन कर उठता है–

> महा प्रलय की है तैयारी,
> हृदय वेदना सुना रहा हूँ।

गजेन्द्र का कवि मन जब-जब शबनमी गीत लिखना चाहता है, तब-तब उसके संवेदन क्रान्ति-कलश से अंगारे छलकने और छिटकने लगते हैं। वह इस तथ्य को स्वीकार करता है कि भारत माँ की खुशियों के सपनों को सजाने के लिए जब शान्ति और अहिंसा की राह दिखाई नहीं देती है, सुनाई देती है भारत की कराह, तब शैतानों के सर्वनाश की चाहना अन्दर करवटें बदलने लगती है–

> हाल वतन का लिखने को मैं जब भी कलम उठाता हूँ,
> शबनम भी लिखना चाहूँ तो अँगारे लिख जाता हूँ।

गजेन्द्र का एक उद्‌बोधन गीत मुझे बेहद पसन्द है–'उठ जाग भारत जाग रे'। हर मंच पर मैं उनसे यह गीत सुनाने का अनुरोध करता हूँ। एक तो वे इस गीत को बहुत सुरीले ओजस्वी अन्दाज़ में सुनाते हैं, दूसरे, इस गीत का शिल्प मंजा हुआ है, कथ्य स्पष्ट है। सम्बोधन शैली में लिखे हुए इस गीत में विश्व-शान्ति का व्यापक सन्देश है।

छन्द के अनेक रूपों का गजेन्द्र ने इस संकलन में प्रयोग किया है। पारम्परिक

दोहे भी लिखे हैं। उनके अनेक दोहे सारगर्भित और मार्मिक हैं—

बूँद-बूँद है कर रही, सागर का गुणगान,
औरों के जो दुख हरे, जग में वही महान।

रामायण, गीता पढ़ीं, बाइबिल और कुरान,
मिला नहीं व्यवहार में, फिर कैसा ये ज्ञान।

रात अमावस की यहाँ, रहती नहीं हमेश,
करें प्रतीक्षा भोर की रहे, तिमिर ना शेष।

'जाग नौजवान' कविता को पढ़कर दिनकर की याद आती है, जिसमें गजेन्द्र लिखते हैं—

जाग नौजवान तुझे भारती पुकारती
जाग नौजवान तुझे मातृ-भू पुकारती
दहल उठेंगे, दिग्दिगन्त, तेरे सिंहनाद से
खल अधम ये भस्म हों, प्रचण्ड शौर्य ज्वाल से
जाग नौजवान तुझे भारती पुकारती।

इस संकलन में गजेन्द्र का एक सर्वथा नया तेवर भी दिखालाई पड़ता है, जब वह लिखते हैं—

ऐसी जर्जर हो गई दरवाजे की टाट
लगी झाँकने बीच से टूटी-फूटी खाट

बहुत मार्मिक ये पंक्तियाँ प्रख्यात लेखक यशपाल की कालजयी कहानी परदा की याद दिलाती हैं, जिसमें टाट के परदे के अन्दर भीषण दरिद्रता के दर्शन होते हैं। जर्जर होते टाट में से अन्दर की टूटी-फूटी खाट को देख लेने की संवेदना जिस तरह से गजेन्द्र ने अपनी विकास-यात्रा में अर्जित की है, उसे देखकर मैं आज कह सकता हूँ कि गजेन्द्र की फायर का स्तर निरन्तर हायर हो रहा है। समग्र हो रहा है।

मेरी शुभकामनाएँ हैं कि इस फायर का स्तर लगातार हायर ही होता जाए।

डॉ. अशोक चक्रधर

जे - 116
सरिता विहार, नई दिल्ली - 44

जब उगलती है लेखनी अँगारे

बात सन् 1998 की है, विश्वविद्यालय के कला-संकाय में एक गोष्ठी थी जिसमें कविता-पाठ और कविता पर बातचीत थी। मैं बतौर अध्यक्ष था तथा श्री गजेन्द्र सोलंकी विशिष्ट अतिथि थे। मैं उन्हें पहचानता नहीं था पर उनका नाम सुना-सा लगा था। गोष्ठी हुई, कविताएँ हुईं, चर्चा हुई; शेष सब कुछ विस्मृति के अँधेरे पक्ष में चला गया पर स्मरण रहा युवा कवि गजेन्द्र का ओजस्वी स्वर से गाया गीत 'उठ जाग भारत जाग...' लगा कि गीत हमें ही जगाने के लिए लिखा गया तथा हमारे आलस्य को भगाने के लिए गाया गया—गजेन्द्र की छवि और उसका कवि कहीं भीतर तक घर कर गए।

समय का रथ अपनी गति से बढ़ने लगा—हम लोग पश्चिम विहार से शिफ्ट होकर हिन्दू कॉलेज के वर्तमान क्वार्टर में आ गए—इस घर में आगे, पीछे लॉन हैं जिनमें बैठना, गोष्ठी करना बहुत भाता है—मैंने गोष्ठी योजना बनाई, आमन्त्रितों की सूची बनी—गजेन्द्र का नाम उच्च स्थान पर था पर गोष्ठी आयोजित नहीं हो पाई। शीघ्र ही उसकी कसक और कसर की पूर्ति की गई—कॉलेज के स्थापना दिवस पर कवि सम्मेलन का आयोजन मुझे ही करना था—गजेन्द्र सोलंकी आए और हिन्दू कॉलेज में उनके गीतों ने धूम मचा दी, छात्र दीवाने हो गए—देशभक्तिपरक और देश की राजनैतिक स्थितियों के व्यंग्य गीतों ने ऐसा समां बाँधा कि हिन्दू कॉलेज के बाद में आयोजित होने वाले प्रत्येक कवि सम्मेलन में गजेन्द्र सोलंकी का बुलाया जाना अनिवार्य घोषित हो गया...

...युवा वर्ग पर उनके काव्य का ऐसा प्रभाव हुआ जैसा कभी भूषण का होता होगा तथा वर्तमान में जैसा बालकवि बैरागी और श्री हरिओम पँवार का होता रहा है। मुझे लगा कि ओजपूर्ण गीतों की बागडोर खिंचते-खिंचते इस युवक के हाथ में आ गई है—मैं जहाँ जाता, वहीं गजेन्द्र की चर्चा होती और मेरी भाँति मेरी पीढ़ी के कितने ही गजेन्द्र के अग्रज उसका नाम यत्र, तत्र, सर्वत्र प्रस्तावित करने लगे।

पहली बार घर आए गजेन्द्र और उपहार के रूप में नए क्वार्टर में दीवार के सौन्दर्यवर्द्धन हेतु अपनी बनाई एक पेंटिंग लाए—"ओह तो गजेन्द्र चित्रकार

भी हैं", मेरी पत्नी स्नेहसुधा के मुख से निकला। गजेन्द्र का वह शिव-पार्वती विषयक तैलचित्र मेरे घर में प्रवेश करते ही प्रथम दीवार पर स्थापित है।

गजेन्द्र विज्ञान के टयूटर रहे, वे कितने अच्छे शिक्षक हैं, इसका आभास मुझे तब हुआ जब उन्होंने मुझे 'थ्योरी ऑफ रिलेटीविटी' सहजता से समझाई, "ओह! तो गजेन्द्र विज्ञान के श्रेष्ठ शिक्षक भी है?" मेरे मन ने कहा था।

...और उस दिन हद हो गई जब हमारे कॉलेज की क्रिकेट टीम के एक सदस्य ने मुझे बताया कि उन पर गजेन्द्र सोलंकी के क्रिकेट-स्टाईल की छाप है। तभी पता चला कि गजेन्द्र रणजी ट्रॉफी तक पहुँच चुके थे—कितनी प्रतिभा, कितने आश्चर्य, 'क्रिकेटर कवि' विश्व में कितने होंगे—यह शोध का विषय है।

गजेन्द्र सोलंकी की कविता पुस्तक की नहीं विराट मंच की कविता है। उसकी कविता भाव के साथ आग बरसाती है। उस कविता की गेयता पुस्तक के समर्पित पृष्ठों में पहचानी नहीं जाती पर माइक्रोफोन के समक्ष खड़े हो, प्रस्तुति में स्वर के आरोह, अवरोह का उदाहरण बनती है। गजेन्द्र की कविता शिवाजी का अभेद्य दुर्ग है, वह बहादुरशाह जफ़र के आवास लालकिला की प्राचीर है—वह रणथम्भोर स्तम्भ का आधार है, वह हल्दी घाटी में चिन्हित चेतक की टापों के निशान है, वह सुभाष के जयहिन्द की प्रति ध्वनि है, वह शौर्य और ओज का मजबूत क़िला है।

हिन्दी साहित्य के आदिकाल में चरण-काव्य का महत्व है—चन्द्र बरदाई कैसे रहे होंगे—गजेन्द्र को देखकर अनुमान हो जाता है जो हरिओम पँवार को देख प्रमाण बनता है।

देश की सौंधी मिट्टी से निकले गीत इस संकलन में मुझे दिखे हैं। हर दूसरे पृष्ठ से प्रमाण-गीतों की ध्वनि मुझे सुनाई देती है। उस संकलन में एकता, अखण्डता, देशभक्ति, विद्रोह, क्रान्ति, शहीदों के स्मरण, सन्तों की स्मृति, राष्ट्र निर्माण की भावना, जलियाँवाला बाग की विभीषिका, लाला लाजपतराय, सुभाष, गाँधी, शास्त्री, प्रताप शिवा, हाड़ा, पन्ना, पद्मिनी, जीजाबाई की प्रेरक छवियाँ. ..बहुत कुछ ऐसा है जो हमें स्मरण रखना चाहिए। देश के कर्णधारों ने इस नाव में छेद कर इसे डुबोने में कसर नहीं रखी क्योंकि वे उन सब व्यक्तियों और स्थितियों को भूल गए है जिन्हें गजेन्द्र का कवि सदा व सतत् याद दिलाए रखना चाहता है।

करगिल के युद्ध से सबके चेहरे लिप्त थे। हमारे वीरों की बहादुरी रंग लाई, हम विजयी हुए। नागपुर में एक विशाल आयोजन हुआ, करगिल विजय महोत्सव पर नागपुर से दिल्ली तक की एक लम्बी विजय-यात्रा निकाली गई। नागपुर से

आयोजक श्री गोविन्द पोद्दार का फोन आया कि मुझे ज़रूर पहुँचना है तथा इस यात्रा का नेतृत्व करना है—वे एक साहित्यकार के द्वारा भी ऐसा करना चाहते थे, मैंने स्वीकृति दी और गजेन्द्र के नाम का भी प्रस्ताव रखा—आयोजक ने फोन पर गजेन्द्र का गीत सुना...उसके बाद आयोजक के फोन पर फोन गजेन्द्र को जाने लगे और हम दोनों ने उस यात्रा की अगुवाई की। गजेन्द्र सोलंकी के प्रमाण-गीतों का कैसेट बनाया गया और हम तो नागपुर की सीमा से लौट आए पर वह कैसेट सारे रास्ते दिल्ली तक बजता रहा और विजय-यात्रा में भाग लेने वालों को कण्ठस्थ हो गया।

संकलन में ऐसे प्रमाण-गीतों के साथ-साथ स्वदेशी की गुहार, राष्ट्रीय खेलों पर विचार, हिन्दी की अस्मिता आदि विषय भी प्रतिपादित हैं जो संकलन के स्वर की एकरूपता को भंग नहीं करते, एलाईड विषय लगते हैं। ऐसी रचनाएँ भी हैं जो इस एकरूपता का हनन करती प्रतीत होती हैं पर स्वतन्त्र रूप में श्रेष्ठ भाव लिए हैं जैसे सूर्यग्रहण, तीज, विक्रमी सम्वत, संगम, खेलपदक, श्रीमान जी, प्रदूषणासुर आदि रचनाएँ।

गजेन्द्र ने बिना किसी भ्रान्ति के इस संकलन को 'क्रान्ति-कलश' कहा है। मेरा यानी उसके अग्रज का, यानी उसके सहकर्मी का और उससे प्रभावित सहधर्मी का अनुमोदन उसके लिए है। संस्कार, भावना, नींव के प्रस्तर, इन सबका वैशिष्ट्य सर्वोपरि है—इन्हें जानने के लिए शिल्प की काव्यशास्त्रीय कसौटी पर कसा जाना मुझे समीचीन नहीं जान पड़ता।

गजेन्द्र सोलंकी को साधुवाद, बधाई और आशीष।

आमीन

—हरीश नवल

हिन्दी विभाग, हिन्दू कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय

बहते पानी की कहानी

मैं बचपन से मन के अँधियारों से लड़ता आया हूँ
आहत भावों की पीड़ा का शोक मनाता आया हूँ
मैंने संघर्षों को पावन गीत समझकर गाया है
कितने ही ग़म पी, अन्तर की प्यास बुझाता आया हूँ

जीवन के इस सुखद पड़ाव पर जब भावनाओं, विचारों को प्रथम काव्य-संग्रह के रूप में अभिव्यक्त करने का समय है, अवसर है सिंहावलोकन का। ऐसे मौसम में बाँटना चाहता हूँ पाठकों से निज अनुभवों, स्मृतियों के अपार कोष में से कुछ कटु, कुछ मृदु संस्मरण। शायद जीवन अर्थात् दुख-सुख के किनारों के बीच बहते पानी की यही कहानी है।

सृजनात्मकता किसी देश, काल, अनुभव, परिस्थिति, भाषा आदि से प्रभावित भले ही हो परन्तु वह आयु एवं समय की सीमाओं से परे होती है। सृजनात्मकता की कोई भाषा नहीं होती, भाषा तो अभिव्यक्ति का साधन मात्र होती है। जहाँ सारे विचार, सारी कल्पनाएँ, सारी भाषाएँ, सभी कलाएँ, सभी अनुभव केन्द्रीभूत होते हैं शायद वहीं होता है सृजनात्मकता का मूल स्रोत।

अतीत का अनुभव, भविष्य की कल्पना एवं आशा का वर्तमान के साथ सामंजस्य ही सृजनशीलता को आधार देता है। घटनाएँ सृजनशीलता को साकार रूप में प्रस्तुत करती हुई व्यक्तित्व को पल्लवित-पुष्पित करती हैं। मानसिक-बौद्धिक विकास व्यक्तित्व को तराशता है। अतीन्द्रिय मार्गदर्शन में घटनाओं का क्रम इन्द्रधनुषी रंगों की तरह बैंगनी से रक्तवर्ण तक क्रमबद्ध न होकर आकस्मिक प्रतीति और विलुप्तिकरण का मिश्रित अनुभव देता है।

जीवन का उन्मत्त हर्ष कभी मन की वीणा को तरंगित कर आह्लादित करता है तो कभी भावहीन व स्वार्थप्रेरित व्यवहार अचानक अन्तर्मन तक झकझोर देता है और एक अविस्मरणीय असहनीय मानसिक वेदना की छाया में जीवन नदी भयभीत-सी बहने लगती है। लेकिन यह भी सत्य है कि कर्मक्षेत्र में यही दारुण वेदना का अनुभव सृजन के लिए आवश्यक ऊर्जा का स्रोत सिद्ध होता है।

बचपन से या कहूँ विद्यार्थी जीवन से अभी तक अनेक शिक्षाविदों, साहित्यकारों, संगीत साधकों, योग साधकों आदि के सान्निध्य के साथ-साथ पुस्तकों से प्रेम के कारण मन में उठनेवाले वैचारिक ज्वार-भाटों से मस्तिष्क नूतन नवल चेतना ग्रहण

करता रहा है। अन्तर्मुखी प्रकृति ने अनजाने ही सृजन द्वारा कलाओं को विकसित करने की प्रेरणा निरन्तर दी। कभी तिमिर बाधा बनकर उपस्थित हुआ तो दैवी कृपा चपला की चमक बनकर मार्गदर्शन करती रही।

जन्म आगरा के सैनिक अस्पताल में हुआ। साधारण परिवार, सेना में कार्यरत, सीधे, सरल किन्तु कठोर अनुशासन की छड़ी हाथ लिये पिता। घर के कामकाज में डूबी हुई संघर्षपूर्वक पारिवारिक, सामाजिक दायित्वों का निर्वाह करती माता। एक बहन, पाँच भाई, एक ताऊजी जिन्हें 'बाबा' कहकर बुलाते थे हम सभी भाई बहन। वे ही सुनाते थे राजा-रानी और इतिहासों की कहानियाँ। विचारों से आर्यसमाजी। जब होश सँभाला तो यही सब मेरे इर्द-गिर्द था।

बचपन अनजानी आकांक्षाओं के स्वप्न बुनते बीता। स्कूली जीवन से ही प्रकृतिप्रदत्त कला का प्रदर्शन एवं विकास का अवसर एवं वातावरण मिला। गायन, कविता, चित्रकला, खेल (क्रिकेट एवं एथलैटिक्स), विज्ञान आदि में लगभग 60 प्रमाण पत्र प्राप्त हुए। प्रशंसा पुरस्कार अनेक क्षेत्रों में सृजनशील होने की प्रेरणा देते रहे। संयोग कहें या ईशकृपा, संस्कार व प्रतिभा मूल रूप अथवा प्राकृतिक रूप में विकसित होते रहे। कल्पना सृष्टि को जैसे शक्ति का वरदान मिलता रहा। शोध कौशल भी विकसित हुआ। परन्तु परिस्थितियों के मायाजाल में कभी पुरुषार्थ प्रधान होता है कभी भाग्य लेकिन सर्वोपरि होती है विधि-इच्छा। शास्त्रोक्ति भी है—"ईश्वरः यत् करोति शोभनमेव करोति"।

समय अबाध गति से बहता है। विज्ञानं का विद्यार्थी, खेलकूद व कलाओं में समय ऊर्जा का उपयोग, परिवार में जीवन-मरण की हलचलें। जब-जब संवेदनाएँ आहत हुईं अन्तर से हूक-सी उठी अभिव्यक्ति की तड़प लिए। तड़प ने भटकाया लेकिन दिशाहीन। 10-12 वर्षों तक विज्ञान एवं गणित का अध्यापन कार्य किया जो आजीविका का साधन भी बना। साथ ही स्कूलों में खेल प्रशिक्षण, योग के क्षेत्र में ज्ञानार्जन, संगीत साधना, निरन्तर उद्योगशीलता एवं चिन्तन, समाज, देश, मानवता के प्रति उत्तरदायित्व का बोध सभी ने कुछ करने की चाह पैदा की। इसी क्रम में ईश्वर प्रदत्त गुणों का सदैव मानवीय संवेदनाओं को प्रधान मानकर संस्थापित करने का प्रयोग चलता रहा। कभी-कभी प्रतिभा का संकुचित मानसिकताओं द्वारा शोषण व तिरस्कार भी हुआ, सरलता को छला गया, परन्तु आशा एवं आकांक्षाएँ, परोपकार की प्यास, महापुरुषों के वचन आदि ने सदा प्रेरित किया। ईश्वरीय विधान और प्राकृतिक न्याय अनुभवगम्य होने से साहस एवं आत्मविश्वास प्रस्फुटित होते हैं। कहते हैं मानव जीवन और व्यवहार शारीरिक, मानसिक आयु, नक्षत्र प्रभाव, आनुवंशिक गुणों, दैवीय प्रभाव, संगति-संस्कार आदि से प्रभावित होकर ही कर्मशील रहता है। जाने-अनजाने मन मरुथल में कविता रूपी जलधारा का प्रवाह होने लगा, सिंचित करने लगा मन के सूखे, तपते कोनों को। कविता की यात्रा सही रूप में सन् 1993

से शुरू हुई। स्कूल में पुरस्कार जीते लेकिन कविता क्या होती है ज्ञान नहीं था, आज भी सीख रहा हूँ। कवि या रचनाकार की चाह होती है जब भी लिखो सुनाओ आसपास के लोगों को, मेरे साथ भी हुआ। कुछ निकटस्थ जनों ने सलाह दी मंचों पर आओ। मंचों की राहें तलाशने लगा। कभी हिन्दी अकादमी, कभी वरिष्ठ कवियों से मिलना, चाह कि एक बार सुन लें। जैसा कि अनुभव था यहाँ भी इधर से उधर भटका। इसी बीच आदरणीय अशोक चक्रधर जी से मिला। उन्होंने रचनाएँ सुनकर कहा—"दोस्त! तुम्हारे भीतर है फायर, मैं बनूँगा तुम्हारा एम्प्लीफायर।" दो वर्ष बीते राहें तलाशते जहाँ अवसर मिलता उत्साह बढ़ता। रोहिणी में डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी जी से सम्पर्क हुआ, और एक गोष्ठी जो कवि अशोक स्वतन्त्र जी के निवास पर मनीषी जी के सान्निध्य में हुई। सम्पर्क में आये कवि मित्र राजेश 'चेतन' साथ ही आदरणीय भाई साहब जगदीश मित्तल जी जिनसे असीम स्नेह मिला। यही से शुरू हुई विशुद्ध कवि सम्मेलनीय यात्रा। धीरे-धीरे मंचों पर पहचान मिली। क्षेत्रीय स्तर से राष्ट्रीय स्तर पर आदरणीय अशोक चक्रधर जी ने राह दिखाई जिनका स्नेह सदैव मिलता है।

अभी तक की यात्रा में जब पीछे मुड़कर देखता हूँ तो स्कूल, कालिज के पूज्य अध्यापक गणों के साथ-साथ अनेक मित्र एवं प्रियजनों के चेहरे स्मृति-पटल पर उभर आते हैं। चौथी कक्षा में बालसभाओं में गीत, रसिया, कविता पाठ से मिलनेवाली प्रशंसा, आठवीं कक्षा में कविता पाठ के लिए मिली प्रथम प्रशस्ति पत्र की शाबाशी आज भी ताज़ा है। आभार प्रकट करना चाहता हूँ उन सभी का जो मुझे निस्वार्थ भाव से प्रेरित करते रहे, बाँटते रहे सुख-दुख, करते रहे मार्गदर्शन, देते रहे सहयोग बिना लालसा, दिखाते रहे दर्पण बन मुझे मेरा स्वरूप। इस सिलसिले में कुछ नाम मुझसे अपना स्थान माँग रहे हैं। क्रमशः उद्धृत करना चाहता हूँ—बचपन के मित्रों में वेदप्रकाश यादव (अच्छे क्रिकेटर एवं अध्यापक), धर्मपाल सिंह (अधिवक्ता एवं आध्यात्मिक व्यक्तित्व), विक्रम सिंह राणा (मेरे मौसा जी), स्व. पहलवान बिशम्भर सिंह (ओलम्पियन एवं रेलवे कोच), जगदीश जी मित्तल (समाजसेवी, अग्रोहा मेडिकल कालिज के वाइस प्रेसीडेंट), मॉडल टाउन दिल्ली में ओम प्रकाश जी शर्मा, ज्ञानचन्द जैन जी, प्रमोद गुप्ता जी, सुरेन्द्र गुप्ता जी, प्रेम गुप्ता जी, दिल्ली स्टडी ग्रुप से भाई विजय जौली जी, भूपेन्द्र कंसल जी, राजेन्द्र गुप्ता जी, सिविल लाइन्स से वरिष्ठ अधिवक्ता रामफल बंसल जी (एक सरल, तपस्वी, आध्यात्मिक व्यक्तित्व), रामनाथ जी मार्दा, गुणवीर जैन जी, श्यामगुप्ता जी, जगदीश जैन जी, दरियागंज में भाई चक्रेश जैन जी, नरेन्द्र जैन जी, अनिल टंडन जी। पवन जी गुप्ता (पी. पी. ज्वैलर्स वाले), महेशचन्द शर्मा जी (पूर्व महापौर), जयकिशन मित्तल जी, सुधीर जैन जी, सुनील जी जैन, सतीश जैन, राकेश जी जैन, प्रदीप जी मित्तल, जे.के. मित्तल जी, अर्जुन कुमार जी, एस.डी. अग्रवाल (ब्लेज़ फ्लैश वाले), रेखा जी गुप्ता, आर. पी. अग्रवाल। राष्ट्रीय

पटल पर दृष्टि जाती है तो कोलकाता में अदाकार संस्था के अध्यक्ष नवल जोशी जी, संगीत कला मंदिर के संयोजक मिश्रा जी। चैन्नई में गौतम खाटीवाल जी, उत्तम जी काँकरिया, पद्म जी टाँटिया। मुजफ्फरपुर के श्याम जी पोद्दार, भागलपुर से पप्पू जी मिश्रा, राँची के गोविन्द जी अग्रवाल, सूरत के गणपतजी मंसाली, मुम्बई के शंकर केजरीवाल, पूना के अभिनन्दनजी थोराट जैसे लोगों का हृदय से आभारी हूँ।

कवि सम्मेलनीय यात्रा में जिन कवि मित्रों का सान्निध्य स्नेह मिला उनमें भाई राजेश 'चेतन' के बिना यात्रा अधूरी है। पिछले 9 वर्षों का साथ अन्तरंगता के धरातल पर चल रहा है। प्रारम्भिक सहयात्रियों में यूसुफ़ भारद्वाज, बाग़ी चाचा, दिनेश रघुवंशी, अशोक स्वतन्त्र, प्रवीण शुक्ल, डॉ. सुनील योगी, विनीत चौहान, वागीश दिनकर, डॉ. कीर्ति काले, दीपक गुप्ता, मंजीत सिंह, गोपीनाथ 'उपेक्षित', अब्दुल अय्यूब गौरी, अनिल जोशी जी, नरेश शांडिल्य जैसे नाम विशेष रूप से लिए जा सकते हैं।

धीरे-धीरे विस्तार के साथ-साथ काव्य यात्रा के साथियों से परिचय बढ़ता गया। जिन वरिष्ठ कवियों से विशेष स्नेह और मार्गदर्शन मिला उनमें सर्वश्री अशोक चक्रधर, सारस्वत मोहन मनीषी जी, गंगाशरण जी तृषित, कृष्णमित्र जी, डॉ. कुँवर बेचैन, मंगल 'नसीम' जी, रवीन्द्र शुक्ल जी, अल्हड़ बीकानेरी जी, राजगोपालसिंह जी, प्रकाश पटेरिया जी, बालस्वरूप जी राही, बालकवि जी बैरागी, शैल चतुर्वेदी। जिनसे किसी न किसी रूप में निरन्तर प्रेरणा मिली उनमें बृजेन्द्र अवस्थी, स्व. शिशुपाल सिंह जी निर्धन, गोपालदास जी नीरज, गोविन्द व्यास जी, सुरेन्द्र शर्मा जी, ओम प्रकाश जी आदित्य, हरिओम जी पँवार, डॉ. उर्मिलेश जी, सन्तोषानन्द जी, सत्यनारायण 'सत्तन' जी, मधुप जी पाण्डेय, जगदीश जी सोलंकी, आत्मप्रकाश जी शुक्ल, उदय प्रताप सिंह जी, प्रदीप जी चौबे, राजवीर सिंह क्रान्तिकारी, आसकरण अटल, राजेन्द्र राजन जी, शिव ओम अम्बर जी, उदयभानु हँस जी, वेदव्रत वाजपेयी जी, अरुण जैमिनी जी, सुरेन्द्र दूबे (जयपुर), सुरेश अवस्थी जी के नाम प्रमुख हैं।

इस कवि सम्मेलनीय यात्रा के निरन्तर सहयोगियों में सर्वश्री ओमव्यास ओम, महेन्द्र अज़नबी जी, आशीष जी अनल, डॉ. कुमार विश्वास, डॉ. सुरेन्द्र दूबे (दुर्ग), देवल आशीष, प्रकाश जी नागौरी, श्याम ज्वालामुखी, वाहिद अली वाहिद, वेदप्रकाश जी, लाजपतराय विकट जी, अर्जुन शिशोदिया जी, अशोक जी भाटी, रासबिहारी गौड़, जगन्नाथ जी विश्व, शैलेश जी लोढा, सुरेश जी बैरागी, पवन दीक्षित, सुरेन्द्र यादवेन्द्र जी, ऐकेश पार्थ, डॉ. रमासिंह, डॉ. मंजू दीक्षित, डॉ. मधुमोहिनी, डॉ. अनिता सोनी, डॉ. सरिता शर्मा, डॉ. सुमन दूबे, डॉ. विष्णु सक्सेना, सम्पत सरल जी, रसिक रत्नेश, प्रताप फौजदार जी, संदीप शर्मा, राकेश शर्मा, आलोक श्रीवास्तव, किरन जोशी जी। कुछ अनुजवत नाम हैं—शाशिकान्त 'शशि', कमलेश शर्मा, राव अजात शत्रु, मनवीर मधुर, चिराग अजनबी, पवन आगरी, रमेश मुस्कान, जानी बैरागी, सुनील साहिल।

जब बात भाषा की होती तो बात राजभाषा की होती। बात माँ हिन्दी की

होती है। हिन्दी की सेवा में संलग्न साहित्यकारों, कवियों की बात चलती है तो भारत की सीमाओं से बाहर जो प्रवासी भारतीय, भारतवंशी पूरे विश्व में संस्कृति की सुगन्ध फैला रहे हैं उनमें कुछ उल्लेखनीय व्यक्तित्व जिनसे परिचय विशेष हुआ इस प्रकार है—

सन् 2002 में यू. के. की यात्रा के दौरान, श्री के. बी. सक्सेना, उषा राजे सक्सेना, डॉ. कृष्ण कुमार, श्री पद्मेश गुप्त (अध्यक्ष यू. के. हिन्दी समिति), सुश्री तितिक्षा शाह, दिव्या माथुर, डॉ. अंजनी कुमार, तेजेन्द्र शर्मा जी, निर्मल शर्मा, रवि शर्मा, सोहन राही, मीनू टकयार जैसे साहित्यकारों एवं साहित्यप्रेमियों से सम्पर्क हुआ। इसी यात्रा में पेरिस में रोमी टकयार, शंकर भाई जी से परिचय हुआ और पेरिस में पहली बार कोई बड़ा कवि सम्मेलन आयोजित हो पाया।

जून सन् 2003 में सूरीनाम की राजधानी पैरामेरिबो में आयोजित सातवें विश्व हिन्दी सम्मेलन में जाने का अवसर मिला। वहाँ से भारतीय उच्चायोग के निमन्त्रण पर पोर्ट ऑफ स्पेन (त्रिनिडाड एण्ड टोबैगो) भी जाना हुआ।

पोर्ट ऑफ स्पेन में आयोजित कवि सम्मेलन में सुखद आश्चर्य पूर्व अनुभूति हुई जब महाकवि प्रो. हरीशंकर आदेश जी से परिचय हुआ। उनका सान्निध्य जीवन की एक बड़ी उपलब्धि थी। भारत की माटी से सत्रह हजार किलोमीटर दूरी पर हिन्दी और भारतीय संस्कृति की साधना में रत एक महायोगी को देख मन श्रद्धा से भर उठा। उनके आश्रम में भी काव्य गोष्ठी हुई, सम्बन्ध प्रगाढ़ हुए और आजतक आदेश जी एवं आदरणीया माता जी से पुत्रवत् स्नेह प्राप्त होता है। वहाँ के उच्चायुक्त महामहिम वीरेन्द्र गुप्ता जी, उच्चायोग में सचिव विनोद सन्दलेश जी, आदरणीय भाभी श्रीमती मधु सन्दलेश एवं सभी परिजनों से स्नेह मिला। सभी हिन्दी एवं भारतीय संस्कृति के उत्थान में समर्पित हैं।

जब काव्य संग्रह के प्रकाशन की बात मन में उठी तो कई विकल्प सामने आए, लेकिन मन ठहरा सुप्रतिष्ठित ग़ज़लकार एवं अमृत प्रकाशन के प्रबन्धक आदरणीय मंगल 'नसीम' जी के पास जो सदैव अनुजवत् स्नेह देते हैं। उनके द्वारा प्रकाशित पुस्तकें उनकी मेहनत और सलाहियत को दर्शाती हैं। 2002 में बनी किताब की रूपरेखा किन्हीं मनोवैज्ञानिक कारणों से स्थगित हुई अब 2005 में काव्य-संग्रह प्रकाशित हो पा रहा है।

जीवन में सम्बन्धों का विशेष महत्व होता है। सम्बन्ध जीवन की गाड़ी के पहिए होते हैं। सम्बन्धों के भावनात्मक पक्ष एवं स्वार्थी पक्ष के बीच में एक पतली-सी रेखा होतीहै। जब मधुर भावनात्मक सम्बन्धों का निर्वाह करते हुए मन आहत होता है तो लेखनी कह उठती है—

अपना प्यारा घर लगता है यूँ तो सारा जग ही मुझको
करना माफ़ मुझे पर यारो सम्बन्धों से डर लगता है

फिर भी सम्बन्धों के बिना जीवन यात्रा कठिन है।

मैं कृतज्ञ हूँ उन सभी का जिन्होंने मेरा मार्गदर्शन किया, रोशनी दी। समान रूप से उनका भी जिन्होंने राह में अवरोध खड़े किये और ऊर्जा संचित करने को प्रेरित किया। हम सभी छोटे से कालखण्ड पर हस्ताक्षर करने आते हैं। कुछ गुमनाम तो कुछ यश के शिखर पर, सभी का अस्तित्व, सभी चेतना के प्रवाह में नहाते डुबकी लगाते...कुछ को मिलते मोती तो कुछ ख़ाली हाथ। हम हित और स्वार्थ का अन्तर समझते हुए उपलब्धियों की ओर बढ़ें। इसी से सम्बन्धों में सरसता एवं जीवन संकल्पों को शक्ति मिलती है।

जीवन यात्रा सार्वभौमिक सिद्धान्तों की ओर अग्रसर प्रतीत होती है जिसमें कविता एवं अन्य कलाएँ एवं सृजनशीलता को आत्मचिन्तन, आत्ममंथन में सहयोगी प्रेरक शक्ति के रूप में अनुभव करता हूँ। यही आत्मशक्ति संकल्पों को आधार व ऊर्जा प्रदान कर लक्ष्यों की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा भी देती रही है। यही प्रार्थना है ईश्वर से—

बाँधों किनारे जीवन नदी के
बह रही जो बँटकर असंख्य धार बनकर
कृपा दृष्टि इस पर प्रभो! आपकी हो
मिल जाए यह भी महासिन्धु में चलकर
ये मरुथल की बालू उष्ण और भयानक
प्रवाह मन्द न हो
हे! ईश दो मुझे वर!

और आख़िरी बात, अपने सुधी पाठकों से। मेरा यह प्रथम प्रयास आपको कैसा लगा? आपकी प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

—गजेन्द्र सोलंकी

203, ए. डब्ल्यू. पी. ब्लॉक,
मौर्य एन्क्लेव, पीतमपुरा
दिल्ली-110088
दूरभाष : 9868236823

अनुक्रम

छन्द-निर्झर

गीत-सरिता

दोहा-सागर

छन्द-निर्झर

दिव्य-चेतना का गान, भारत का स्वाभिमान
शहीदों का वरदान गीत वन्दे मातरम्
गौरव का देता ज्ञान, नवयुगी अभियान
एकता की पहचान गीत वन्दे मातरम्
शान्ति का है परिधान, तीन रंगों की है शान
नव क्रान्ति का विहान गीत वन्दे मातरम्
मित्रता की है ये आन, बैरी के लिए कृपाण
सबका ही है महान गीत वन्दे मातरम्

वाणी-वन्दना

मातु हंसवाहिनी, प्रदीप्त ज्ञानदायिनी माँ
मेरे प्यारे भारत को ऐसा वरदान दे
हर घर-आँगन में खुशियों के फूल खिलें
विश्व-गुरु भारत की खोई आन-बान दे
दैवी आपदाओं से माँ करना सुरक्षा सदा
भ्रष्ट-दुष्ट पापियों को भी तू सद्ज्ञान दे
कवियों की कविता हो लोक-कल्याणकारी
हर भारतीय को असीम स्वाभिमान दे

एकता, अखण्डता का सुर चारों ओर उठे
जन-गण-मन को वीणा की ऐसी तान दे
सारी ये वसुन्धरा ही बन जाये तीर्थ-धाम
शक्ति और भक्ति का अमर दिव्य-दान दे
सागर-सा धैर्य और चिन्तन विशाल, मातु
लक्ष्य के विधान-हेतु साधना दे ज्ञान दे
भाँति-भाँति के सुमन महकाएँ देवभूमि
राम-कृष्ण जैसे महापुरुष महान दे

कितने दधीचियों ने अस्थियों का दिया दान

कितने दधीचियों ने अस्थियों का दिया दान
कितने तपस्वियों का मिला वरदान है
कितने ही दिनकर उदित हुए हैं यहाँ
अँधेरों पे जिनका ये विजय-अभियान है
तम के सितम से न हार जाए उजियारा
नये युग का ये नयी क्रान्ति को आह्वान है
भारत के वासियो! तुम्हारे ही हाथों में अब
मातु भारती की आ़न-बान और शान है

सबके दिलों में 'हिन्दुस्तान होना चाहिए

नहीं अब हिंसा की हो कूटनीति, राजनीति
एकता की क्रान्ति का ही गान होना चाहिए
सारी वसुधा को ही कुटुम्ब मानने के साथ
निज संस्कृति का भी भान होना चाहिए
देश की विशेषता 'अनेकता में एकता' है
वन्दे-मातरम् वरदान होना चाहिए
जाति, पाँति, भाषा, धर्म, प्रान्त-भावना से पूर्व
सबके दिलों में 'हिन्दुस्थान' होना चाहिए

हर भारतीय को सुभाष होना चाहिए

भारत को अपमान-दंश देने वाले सभी
आस्तीनी साँपों का विनाश होना चाहिए
अपनी ये प्यारी न्यारी मातृभूमि के लिए ही
प्राण तजने का अहसास होना चाहिए
चाहे कितना ही तम घिर आए चहुँ ओर
किन्तु आदमी को न निराश होना चाहिए
शत्रुओं का सर्वनाश करने के लिये आज
हर भारतीय को सुभाष होना चाहिए

शत्रु-नाश-हेतु काल विकराल हम हैं

अवतारों, शूर-वीरों के हैं अनुचर हम
सूफ़ी, सन्त, पीरों की भी हम सरगम हैं
राम, कृष्ण, महावीर, की ही हैं सौगन्ध हम
बुद्ध और नानक की हम ही क़सम हैं
राणा औ' शिवाजी, गुरु गोविन्द के वंशज हैं
जानता है जग हम किसी से न कम हैं
शान्ति औ' अहिंसा भले नीति-रीति हो हमारी
शत्रु-नाश-हेतु काल विकराल हम हैं

शिवाजी मराठा सरदार को प्रणाम है

नारियों को जननी समान मान देनेवाले
जीजाबाई वाले संस्कार को प्रणाम है
गुरु रामदास वाली चेतना से ओत-प्रोत
पंथनिरपेक्ष दरबार को प्रणाम है
शत्रुओं को मिली ललकार को प्रणाम और
माता भवानी की तलवार को प्रणाम है
शूरता के दिव्य पारावार को प्रणाम मेरा
शिवाजी मराठा सरदार को प्रणाम है

गुरुजी की पावन कहानी याद कीजिए

कंधार की रण-भूमि में जो देश-हित लड़े
नौजवान बेटों की जवानी याद कीजिए
पंज-प्यारे और बन्दा बैरागी की शहादत
गुरुग्रंथ साहिब की बानी याद कीजिए
सरहिंद में जो दीवारों के बीच चिने गए
उन शूरपुत्रों की निशानी याद कीजिए
'एक को लड़ाऊँ सवा लाख से' था उद्घोष
गुरुजी की पावन कहानी याद कीजिए

आन-बान वाले राजस्थान को प्रणाम है

पन्ना धाय, पद्मिनी और हाड़ा रानी वाले
नारियों के पुण्य स्वाभिमान को प्रणाम है
मातृभूमि के हितार्थ भामाशाह ने जो दिया
इतिहास में अकेले दान को प्रणाम है
घासवाली रोटियाँ जो खा के भूमि पर सोए
प्रभु एकलिंग के दीवान को प्रणाम है
शूरता औ' वीरता, पराक्रम के पर्याय
आन-बान वाले राजस्थान को प्रणाम है

राणा जी प्रताप की तपन को नमन है

चेतक की टापों संग हल्दीघाटी में जो उड़ी
उस धूल से सजे गगन को नमन है
धर्म, संस्कृति, स्वाभिमान हेतु किया गया
शूरता के पावन हवन को नमन है
राजस्थानियों के हृदयों में जो धधक रही
राजपूतों वाली उस अगन को नमन है
हल्दी घाटी से दिल्ली तक भी पहुँच गयी
राणा जी प्रताप की तपन को नमन है

लक्ष्मीबाई तेरी तरुणाई को नमन् है

आन-बान-शान और स्वाभिमान की मशाल
क्रान्ति-चेतना की अँगड़ाई को नमन् है
काल के कराल-भाल जिससे तिलक किया
उस पुण्य लहू की ललाई को नमन् है
झाँसी राजवंश की कमाई को नमन् और
क्रान्ति के स्वरों की शहनाई को नमन् है
चिड़िया की बाज़ से लड़ाई को नमन् सौ-सौ
लक्ष्मीबाई तेरी तरुणाई को नमन् है

शहीदों की याद नहीं दिल से भुलाइये

आज़ादी का जश्न आओ मिलके मनाएँ सब
चाहे होली खेलिये, दीपावली मनाइये
मन्दिरों में आरती या मस्जिदों में हो अजान
चाहे ईद पर सबको गले लगाइये
बेटे-बेटियों की हो या दौलत की चाह यारो
कितने ही ख़्वाब आप आँखों में सजाइये
कुरबानियों से जिनकी ये बस्तियाँ आबाद
शहीदों की याद नहीं दिल से भुलाइये

'दिल्ली चलो' वाली ललकारों को नमन् है

जिनके लहू ने रचा क्रांति वाला इतिहास
जलियाँवाले बाग़ के शिकारों को नमन् है
शान्ति औ' अहिंसा के विचारों को नमन् और
क्रान्ति के गगन के सितारों को नमन् है
आज़ादी की डोली के कहारों को नमन् और
'लाला जी' की पीठ के प्रहारों को नमन् है
'तुम मुझे ख़ून दो औ' मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा'
'दिल्ली चलो' वाली ललकारों को नमन् है

'सेल्युलर जेल' की दीवारों को नमन् है

हमको उजाला देते-देते जो बुझे हैं, उन
दीपकों की पावन कतारों को नमन् है
मातृ-वंदना के गीत गाते-गाते चूम लिए
उन फाँसी वाले पुण्य-हारों को नमन् है
बलिदानी स्वरों की पुकारों को नमन् मेरा
कोल्हुओं से बही तेल-धारों को नमन् है
क्रांतिकारियों ने जहाँ लिखा वन्देमातरम्
'सेल्युलर जेल' की दीवारों को नमन् है

सारे ही शहीद आसमाँ के तारे हो गये

कारगिल, द्रास औ' बटालिक की घाटियों में
भारती के लाल थे जो निज शीश बो गये
बर्फ़-ढँकी चोटियाँ वे तीर्थ के समान हुईं
जिन्हें रणवीर निज शोणित से धो गये
पग-पग पे लहू से वन्देमातरम् लिखा
और फिर गिरके वे चिर नींद सो गये
पंचतत्त्व का शरीर पंचतत्त्व-लीन हुआ
सारे ही शहीद आसमाँ के तारे हो गये

हुए जो शहीद, हम सबके दुलारे थे

सेन्दुर सुहागिनों के देश पे शहीद हुए
निज मात औ' पिता की अँखियों के तारे थे
भोले-भाले बचपन की अधूरी प्यास और
बहनों की राखियों के भाई रखवारे थे
प्राण-दान देके जो सुरक्षा-सम्मान दिया
भारती के भाल पे चमकते सितारे थे
कोटि-कोटि जन हम करते नमन् आज
हुए जो शहीद, हम सबके दुलारे थे

विक्रमी संवत्

विक्रमी सम्वत् वाला नव-वर्ष प्रिय बन्धु
सभी देशवासियों को मेरी शुभकामना
जीवन में पग-पग पे सदा सुमन खिलें
साये हों बहार के, हो काँटों से न सामना
साँसों के सुरों में गीत और संगीत सजे
नयी रीत, नयी प्रीत की हो नव-भावना
भूल द्वेष-भाव, चले जीवन की नाव अब
नव-निर्माण की हो पूरी मनोकामना

संगम

गंगा, यमुना औ' सरस्वती जहाँ मिलती हैं
तीरथ प्रयागराज में गोते लगाइये
सदियों से कोटि-कोटि जन यहाँ मुक्ति पाये
जनमों का पुण्य-लाभ आप भी उठाइये
डुबकी लगायें तो ये तन ही नहाये नहीं
मन के भी पाप आप यहाँ बिसराइये
आप राजनीति के जो पाप धोना चाहते हैं
भ्रष्ट नेताओं को यहीं लाकर डुबाइये

श्रीमान् जी

भय, भूख, भ्रष्टाचार का मिटा के अन्धकार
लाज लोकतन्त्र की बचाओ श्रीमान् जी
देश की समस्याएँ जो बनके पहाड़ खड़ीं
चुन-चुन उन्हें सुलझाओ श्रीमान् जी
बड़ी आशाओं से जनता ने प्रेम-दान दिया
जन-मन-सुमन खिलाओ श्रीमान् जी
भारत का जन-जन करे आपका नमन्
ऐसे कुछ काम कर जाओ श्रीमान् जी

तीज

तीज हरियाली आई मन में उमंग लाई
लगे मानो सावन पे चढ़ती जवानी है
पपीहा के गीत और दादुरों के स्वर मीत
भँवरों का नृत्य कहे रुत मस्तानी है
झूले अम्बुआ की डार, नार गाएँ मल्हार
सखी औ' सहेली कहें रूप में रवानी है
पुरवा बयार लाई रिमझिम-सी फुहार
बादलों की जीत-हार लगती सुहानी है

प्रेम के प्रसंग रसवाली होली आई रे

सुनो मेरे मीत, राष्ट्र-भावना के गीत और
प्रीति की प्रतीति लेके आया तव धाम जी
आपके अतीत के ही संस्कार वाली रीत
पावन सी प्रीत लेके आया तव धाम जी
गई अब बीत ठिठुरन ऋतु शीत की रे
टेसू रंग पीत लेके आया तव धाम जी
हो रहा प्रतीत, होगी प्रेम की ही जीत भैया
होली के ये गीत लेके आया तव धाम जी

यौवन पे है उमंग औ' वसंत की तरंग
मद भरे रंग ले निराली होली आई रे
दिलदार संग-संग झूमते हैं पी के भंग
भीगे अंग-अंग मतवाली होली आई रे
उठती उचंग तन हो रहा मलंग आज
देख सभी हुए दंग आली होली आई रे
मचा हुड़दंग पिचकारियों की छिड़ी जंग
प्रेम के प्रसंग रसवाली होली आई रे

देवरों ने रंग डाले भाभियों के प्रिय अंग
देवरानियों की ससुराली होली आयी रे
जीजाओं के हाथों में गुलाल सालियों के किये
गाल लाल-लाल जो रंगीली होली आई रे
युवा बने ग्वाल बाल बालाए ग्वालिन बनी
लगे मानो बरसाने वाली होली आयी रे
साठ साल वालों के भी दिल हैं जवान आज
सब के गालों पे छायी लाली होली आई रे

इसीलिए बार-बार हम हार जाते हैं

करते न तकरार, बाँटते रहे हैं प्यार
खेलों में भी प्रेम पाठ जग को सिखाते हैं
ओलम्पिक में भी मार देख लीजे बार बार
मुंगेरी जी पदकों के सपने सजाते हैं
हम खेल-भावना से खेलते हैं हर खेल
हारते हैं पर न तनिक भी लजाते हैं
सारी वसुधा कुटुम्ब सदियों से मानते हैं
इसीलिए बार-बार हम हार जाते हैं

वाह वाह मालेश्वरी

वाह-वाह मालेश्वरी, की है ख़ूब कारीगरी
भारत की शान सारे जग में बढ़ाई है
सारे ही खिलाड़ी जब नाक कटवा रहे थे
जीत के पदक लाज देश की बचाई है
भारत की नारी का बढ़ाया तूने मान और
धज राष्ट्र-ध्वज की ये तूने ही बढ़ाई है
बेटी तेलुगू की और बहू हरियाणा की तू
सौ करोड़ लोगों की बधाई है, बधाई है

झारखण्ड या वनांचल को प्रणाम

बाबा भोलेनाथ वाले देवधर को प्रणाम
तीर्थ बैजनाथ पुण्य धाम को प्रणाम है
पार्श्वनाथ मंदिर जी की घंटियों को प्रणाम
दामोदर घाटी वाली शान को प्रणाम है
झिनमस्तिका देवी के दिव्य शीश को प्रणाम
रजरप्पा शक्ति पीठ ग्राम को प्रणाम है
अंग्रेजों को आइना दिखानेवाले भगवान
बिरसा मुण्डा जी की आन-बान को प्रणाम है

महकती मारीशस माटी को प्रणाम है

भारत की भाषा और संस्कृति को संजोए
दिव्य औ अमिट परिपाटी को प्रणाम है
अवधी की चौपाईयां भोजपुरी लोकगीत
कबिरा की साखी की लुकाटी को प्रणाम है
जिसको दयाल बन्धुओं ने सुरभित किया
घट घट बसी हिन्दी घाटी को प्रणाम है
सैकड़ों बरस खून औ पसीने से जो सींची
महकती मारीशस माटी को प्रणाम है

सूरीनाम को प्रणाम है

विश्व हिन्दी सम्मेलन की सभी को है बधाई
हिन्दी माँ के इस प्यारे ग्राम को प्रणाम है
सैकड़ों बरस की जो साधना का है प्रताप
माई बाप वाले प्रिय धाम को प्रणाम है
सूर, तुलसी, कबीर, मीरा की परम्परा की
कविताओं वाली दिव्य शाम को प्रणाम है
हरी-भरी धरती के रूप को प्रणाम मेरा
हिन्दी छवि वाले सूरीनाम को प्रणाम है

वन्दे मातरम्

दिव्य-चेतना का गान, भारत का स्वाभिमान
शहीदों का वरदान गीत वन्दे मातरम्
गौरव का देता ज्ञान, नवयुगी अभियान
एकता की पहचान गीत वन्दे मातरम्
शान्ति का है परिधान, तीन रंगों की है शान
नव क्रान्ति का विहान गीत वन्दे मातरम्
मित्रता की है ये आन, बैरी के लिए कृपाण
सबका ही है महान गीत वन्दे मातरम्

मन्दिरों में भगवान, गुरुद्वारों का है ज्ञान
मस्जिदों की भी अजान गीत वन्दे मातरम्
माटी की है मुस्कान, लोकतंत्र का है मान
सौ करोड़ का है प्राण गीत वन्दे मातरम्
सूर, तुलसी, कबीर, मीरा और रसखान
मुरली की मीठी तान गीत वन्दे मातरम्
जय जवान, जय किसान और जय विज्ञान
सबका ही है महान गीत वन्दे मातरम्

गीत-सरिता

ना मैं छन्दों का सौदागर
ना ही गीतों का व्यापारी
हृदय वेदना सुना रहा हूँ
मैं मानव का प्रेम पुजारी

हिन्दी पावन गंगा

अमर रहे वैभव तेरा हिन्दी मातु महान!
करें हम अन्तिम सांस तक तेरा ही यशगान

मेरे देश के बसैया हिन्दी को अपनाओ रे!
हिन्दुस्थान के बसैया हिन्दी को अपनाओ रे!
'जय हिन्दी' का नारा मिलकर सभी लगाओ रे!
मेरे देश के बसैया हिन्दी को अपनाओ रे!

हिन्दी जन-जन के अन्तर में प्रेम-सुधा बरसाती है
ज्योति नवल नूतन हिन्दी की, जीवन धन्य बनाती है
मन के गहन तिमिर को हरकर, आशा-दीप जलाती है
नई चेतना भरकर मन में साहस नया जगाती है

हिन्दी दुर्गा, हिन्दी काली, सरस्वती कल्याणी है
हिन्दी ब्रह्मा, विष्णु, औ' शिव की महाशक्ति क्षत्राणी है
हिन्दी लक्ष्मी, पार्वती, कमला का है अवतार अमर
शब्द ब्रह्म की अनुपम पुत्री और अनूठी वाणी है

हिन्दी पावन गंगा, गोता सभी लगाओ रे!
ओ, मेरे देश के बसैया हिन्दी को...अपनाओ रे!!

सूफ़ी, सन्तों ने जिस भाषा का हरपल यशगान किया
तुलसी, सूर, कबीरा सबने हिन्दी का आह्वान किया
वल्लभ, विट्ठल और जायसी हिन्दी का गुणगान किया
मीरा औ' रसखान ने भी हिन्दी अमृत का पान किया

नानक औ' रैदास, मलूका की भक्ति महकाती है
हों रहीम, रत्नाकर, भूपति हिन्दी सबको भाती है
प्रेमचन्द, भारतेन्दु, बिहारी हिन्दी सबकी थाती है
केशव, रामानन्द, गजानन का गौरव बतलाती है

मन के सिंहासन पर हिन्दी को बैठाओ रे . .
ओ, मेरे देश के बसैया हिन्दी को...अपनाओ रे!!

बच्चन, पंत, निराला, दिनकर हिन्दी-महिमा गाई है
शुक्ल, द्विवेदी औ' भूषण ने भी हिन्दी अपनाई है
चंदरबरदाई के छंदों में हिन्दी मुस्काई है
नागर, धूमिल, नागार्जुन ने हिन्दी-कथा सुनाई है

जयशंकर औ' गुप्त, सुभद्रा हिन्दी-गाथा कहते हैं
स्नातक औ' केदार, कोहली हिन्दी-धार में बहते हैं
देवराज, त्यागी, नेपाली और व्यास भी कहते हैं
हिन्दी का आशीष मिला हम सबके दिल में रहते हैं

हिन्दी-माँ की ममता-छैयाँ मत बिसराओ रे!
ओ मेरे देश के बसैया हिन्दी को...अपनाओ रे!!

विद्यापति, शमशेर, त्रिलोचन, निर्मल, शानी आए हैं
घनानन्द औ' बालकृष्ण या हरिऔध चित भाए हैं

रमानाथ, परसाई, जोशी और प्रगल्भ लुभाए हैं
मुक्तिबोध, अज्ञेय, अश्क ने हिन्दी के गुण गाए हैं

काकाजी, नीरज, बैरागी, इंदीवर मनभाए हैं
हों प्रदीप या भरत व्यास, हिन्दी के गीत सुनाए हैं
विष्णु प्रभाकर, कमलेश्वर ने हिन्दी पुष्प खिलाए हैं
माणिक, शैल, आदित्य, चक्रधर हिन्दी मंच सजाए हैं

विजय-पताका हिन्दी की जग में फहराओ रे
ओ, मेरे देश के बसैया हिन्दी को...अपनाओ रे!!

भाषाओं की नदियाँ मिलतीं हिन्दी ऐसा सागर है
छलक रही अमृत-घट सम जो हिन्दी ऐसी गागर है
भारत की रग-रग में बहता हिन्दी प्रेम-सुधाकर है
गली-गाँव औ' नगर-नगर में हिन्दी ज्ञान-प्रभाकर है

हिन्दी संस्कृत की बेटी है, नित-नित नयी-नवेली है
गुजराती, कन्नड, मलयालम या बोली बुन्देली है
तमिल, मराठी, बंगला, उर्दू, पंजाबी अलबेली है
हिन्दुस्थानी हर भाषा हिन्दी की सखी-सहेली है

हिन्दी-गौरव की सुगन्ध जग में फैलाओ रे
ओ, मेरे देश के बसैया हिन्दी को...अपनाओ रे!!

अँग्रेज़ो, तुम भारत छोड़ो बापू ने उच्चारा था
'ख़ून के बदले आज़ादी' यह नेताजी का नारा था
आज़ादी का हर परवाना हिन्दी में हुंकारा था
'जय जवान औ' जय किसान' भी हिन्दी का ही नारा था
हिन्दी ही तो आज़ादी के संघर्षों की शक्ति रही
भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु औ' शेखर की भक्ति रही
अशफ़ाकउल्ला औ' बिस्मिल की हिन्दी में अनुरक्ति रही
हिन्दी ही तो क्रान्ति की भाषा औ' पौरुष-अभिव्यक्ति रही

हिन्दी प्रेम-पुजारी बन सब शीश झुकाओ रे
ओ, मेरे देश के बसैया हिन्दी को...अपनाओ रे!!

हिन्दी मन की भाषा, हिन्दी जन-जन की अभिलाषा हो
नयी सदी, नवयुग में हिन्दी नवचेतन की आशा हो
कोटि-कोटि जन प्रेम करें अब ऐसी कुछ परिभाषा हो
हिन्दी के मस्तक पर छाया अब तो दूर कुहासा हो

हिन्दी अपनी भाषा अपनी संस्कृति का उद्धार करें
साधक बन ऋषियों-मुनियों के सपनों को साकार करें
अलंकार, रस, छन्दों से अब हिन्दी का शृंगार करें
अपमानित ना हो घर में ही ऐसा कुछ इस बार करें

सौ करोड़ सब मिल हिन्दी को तिलक लगाओ रे
ओ, मेरे देश के बसैया हिन्दी को...अपनाओ रे!!

उठ जाग भारत जाग रे

उठ जाग भारत जाग रे
आलस्य, निद्रा त्याग रे
पुरुषार्थ का बीड़ा उठा
जागेगा तेरा भाग रे
उठ जाग भारत जाग रे...

टुकड़ों में जो तू बँट रहा
उत्साह तेरा घट रहा
संघर्ष की बेला है यह
तू एकता का बिगुल बजा
उठ जाग भारत जाग रे...

नेता सुभाष की आस तू
औ' पटेल का विश्वास तू
तू बापू की लाठी भी है
औ' शौर्य का आकाश तू
उठ जाग भारत जाग रे...

ऋषियों की है संतान तू
औ' शहीदों का अरमान तू
गौरव है राम और कृष्ण का
है भविष्य का भगवान तू
उठ जाग भारत जाग रे...

अब छोड़ राग ये ज़ात का
पंजाब का, गुजरात का
तू हिंद की सन्तान है

कर अंत काली रात का
उठ जाग भारत जाग रे...

क्यों चीख़ता कश्मीर है
क्यों पूर्वांचल भी अधीर है
अबला की लुटती लाज क्यों
मन भारती के पीर है
उठ जाग भारत जाग रे...

जन-जन के तन-मन-प्रान में
अज्ञानियों के ध्यान में
नवयुग का तू संदेश भर
इस व्यथित हिन्दुस्तान में
उठ जाग भारत जाग रे...

अब दूत बन तू क्रान्ति का
वरदान दे पर शान्ति का
तू जग-हृदय सम्राट बन
कर अंत विश्व-अशान्ति का
उठ जाग भारत जाग रे...

तू ध्यान कर उस आन का
खोई हुई पहचान का
संकल्प ले निर्माण का
ख़ुशहाल हिन्दुस्तान का
उठ जाग भारत जाग रे...

माँ भारती का ध्यान कर
तू शक्ति का आह्वान कर
अब राष्ट्र के कल्याण हित
निज स्वार्थ का बलिदान कर
उठ जाग भारत जाग रे...

माटी की पुकार

नौजवान तू सो रहा, अब भी चादर तान
आग लगी घर में तेरे, जाग अरे नादान

भारती है संकट में आज
रखेगा तू ही इसकी लाज
माटी लहू माँगती है
दीप जला बलिदान के
माँ बलिदान माँगती है

ना तू हिन्दू, ना तू मुस्लिम
ना ही सिख-ईसाई है
जिस माटी में पला-बढ़ा
इस माता का करज़ाई
छोड़ अब प्रणय गीत गाना
पहन ले केसरिया बाना
माटी लहू माँगती है
दीप जला बलिदान के
माँ बलिदान माँगती है

कायरता की नींद तोड़, ले
साहस की अँगड़ाई
याद दिलाने तुझे शौर्य की

स्वर्णिम बेला आई—
लजा मत दूध तू माता का
चुका उपकार विधाता का
माटी लहू माँगती है
दीप जला बलिदान के माँ
माँ बलिदान माँगती है

भूल रहा तू क्यों राणा के
स्वाभिमान की भाषा
शिवा और गुरु गोविन्द सिंह के
सपनों की अभिलाषा
तू ही भगत और आज़ाद
ज़रा कर तू बिस्मिल की याद
माटी लहू माँगती है
दीप जला बलिदान के
माँ बलिदान माँगती है

जाग नौजवान तुझे भारती पुकारती

जाग नौजवान तुझे भारती पुकारती
जाग नौजवान तुझे मातृ-भू पुकारती

दहल उठेंगे दिग्‌दिगन्त
तेरे सिंहनाद से
खल अधम ये भस्म हों
प्रचंड शौर्य ज्वाल से
जाग नौजवान तुझे भारती पुकारती

गूँज उठें धरा गगन
तेरे यशोगान से
भ्रष्ट-दुष्ट जल उठें
तेरी आन-बान से,
जाग नौजवान तुझे भारती पुकारती

धर्म-ध्वजा हाथ ले
पुण्य-पथ प्रशस्त कर
शक्ति आह्वान करके
पाप दुर्ग ध्वस्त कर
जाग नौजवान तुझे भारती पुकारती

कोटि शीश, कोटि बाहु
रूप तू विराट धर
तेज बल अपार से
भारती के कष्ट हर,
जाग नौजवान तुझे भारती पुकारती

नवयुगीन बेला बंधु
फिर कभी न आयेगी
मिट गया जो, पुण्य भूमि
तेरे गीत गायेगी,
जाग नौजवान तुझे भारती पुकारती

है शरीर नाशवान
कर्म ही अमर यहाँ
जलना बन के क्रान्तिदीप
तेरा धर्म है यहाँ
जाग नौजवान तुझे भारती पुकारती

हो रही धरा अधीर
दानवों के भार से
हो रहा प्रकाश भीत
घोर अंधकार से
जाग नौजवान तुझे भारती पुकारती

ना मैं छंदों का सौदागर

ना मैं छन्दों का सौदागर
ना ही गीतों का व्यापारी
हृदय वेदना सुना रहा हूँ
मैं मानव का प्रेम पुजारी

अमर क्रान्ति की आग लिखूँ या
खुशियों की मल्हार सुनाऊँ
छद्म वेषधारी पुतलों को
कैसे मैं देखूँ हरषाऊँ
बढ़ते ही जाते कुचक्र जब
सत्ता लोलुप शैतानों के
स्वार्थों के ख़ूनी दलदल में
कैसे गीतों को नहलाऊँ
क़दम-क़दम पर नर पिशाच हैं
दानवता का ताण्डव जारी
हृदय वेदना सुना रहा हूँ...
मैं मानव का प्रेम पुजारी

लगते पहरे मुस्कानों पर
खिड़की-दरवाजे हैं घायल

सहमे-सहमे खेल-खिलौने
चीख़-चीख़ रोती हैं पायल
अंधकार बढ़ता ही जाता
गली-गाँव औ' नगर-नगर में
मानव से डरती मानवता
रोता धरती माँ का आँचल
कैसे खुशी मनाऊँ भैया
जब तक मानवता दुखियारी
हृदय वेदना सुना रहा हूँ...
मैं मानव का प्रेम पुजारी

सावन प्यासा, भादों प्यासा
यौवन का पनघट प्यासा है
आशा प्यासी, सपने प्यासे
जीवन का मधुबन प्यासा है
जनसंख्या का दानव बनकर
भस्मासुर बढ़ता जाता है
निगल रहा वन, गाँव, जलाशय
माटी का कण-कण प्यासा है
इस माटी की प्यास बुझाओ
बनकर कलियुग के अवतारी
हृदय वेदना सुना रहा हूँ...
मैं मानव का प्रेम पुजारी

रोतीं गंगा, यमुना, सरयू
ब्रह्मपुत्र, कावेरी रोतीं

रोतीं सतलुज, व्यास, घाघरा
झेलम, कृष्णा, रावी रोतीं
फैल रहा विष अंग-अंग में
जिसको पीकर बहती जातीं
सागर की उत्ताल तरंगें
पटक-पटक सर तट पर रोतीं
हुए विषैले जल-थल-अम्बर
महाप्रलय की है तैयारी
हृदय-वेदना सुना रहा हूँ...
मैं मानव का प्रेम पुजारी

ना चाहे मन चाँद-सितारे
ना नवयुग का स्वर्ण-सवेरा
मन तो चाहे हट जाये बस
अन्तहीन घनघोर अँधेरा
ना चाहे मन सोना-चाँदी
नहीं लालसा राजमहल की
मत दो मुझको विष आशा का
दो केवल अधिकार जो मेरा
माली बन सींचो बगिया को
होगा जन-गण-मन बलिहारी
हृदय वेदना सुना रहा हूँ...
मैं मानव का प्रेम पुजारी

राष्ट्र पुनः हो विश्व-गुरु अब
अभिनव बेला का अभिनंदन
दिव्य-ज्योति से भावों की हो
पल-पल राष्ट्रदेव का वंदन
मिटे स्वार्थ का अंधकार अब
स्वाभिमान का हो उजियारा
मिला शक्ति वरदान हमें, हम
जग को दें मैत्रेयी स्पंदन
श्रीयुक्त माटी पग-पग हो
करें स्वर्ण-युग की तैयारी
हृदय वेदना सुना रहा हूँ...
मैं मानव का प्रेम पुजारी

हम हैं वीर शिवा के वंशज
हम राणा के स्वाभिमान हैं
चन्द्रगुप्त, चाणक्य-प्रतिज्ञा
के अभिनव शक्ति-विधान हैं
हम से ही भारत का गौरव
हम ही इस उपवन के माली
भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु
के सपनों के हमीं प्रान हैं
भस्म करें अब अतिचारों को
होगी धरती माँ आभारी
हृदय वेदना सुना रहा हूँ...
मैं मानव का प्रेम पुजारी

पूरब जागो! पश्चिम जागो
जागो! हे हिमगिरि के वासी
उत्तर जागो! दक्खिन जागो!
जागो! विन्ध्याचल वनवासी
जाति, धर्म, भाषा के बंधन
तोड़ के नवयुग में है जाना
पर्वत, घाटी, जंगल जागो!
जागो! रामेश्वर और काशी
है अन्तिम आह्वान धरा का
शायद फिर ना आये बारी
हृदय वेदना सुना रहा हूँ...
मैं मानव का प्रेम पुजारी

ओ वीरों के वंशज जागो
जागो पौरुष के अवतारो
कोटि-कोटि शिव शंकर जागो
जागो शोणित के अंगारो
करो प्रकाशित दसों दिशाएँ
बनकर तुम नवयुग के दिनकर
क्रान्तिवीर प्रलयंकर जागो
जागो नवनूतन उजियारो
बेला है यह बलिदानों की
कर दो दूर निशा अँधियारी
हृदय वेदना सुना रहा हूँ...
मैं मानव का प्रेम पुजारी

अंगारे लिख जाता हूँ

मेरे गीतों में भारत का स्वाभिमान लहराता है
मेरे छन्दों में संस्कृति का मेघ मल्हारें गाता है
सबके मन तक पहुँचाता है अंगारों की भाषा को
मन भारत-माँ की खुशियों के सपने रोज़ सजाता है

पर ना शान्ति-अहिंसा की जब राह दिखाई देती है
मेरे गीतों में भारत की आह सुनाई देती है
गली-गली क़ातिल मौसम जब शोले ही बरसाता हो
शैतानों के सर्वनाश की चाह दिखाई देती है
हाल वतन का लिखने को मैं जब भी क़लम उठाता हूँ
शबनम भी लिखना चाहूँ तो अंगारे लिख जाता हूँ

जिसके मस्तक मुकुट हिमालय, दक्खिन सागर लहराता
राम-कृष्ण औ' महावीर ने कहा जिसे अपनी माता
गौतम, नानक औ' कबीर ने जिस धरती पर जन्म लिया
जिसके गौरव की गाथाएँ सदियों से यह जग गाता

जिसकी आज़ादी की ख़ातिर वीरों ने बलिदान दिये
भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु ने फाँसी चढ़ प्रान दिये

जागती आँखों से देखे सपने माँ की आज़ादी के
नेताजी औ' गाँधीजी ने भी सारे सुख दान दिये

राणा और शिवा, गुरु गोविन्द सिंह थे माँ के सेनानी
शेखर औ' लक्ष्मीबाई ने भी तो दी थी कुर्बानी
देशभक्ति की लौ पर कितने ही परवाने ख़ाक हुए
आज़ादी तो मिली मगर क़ीमत हमने कब पहचानी
देश पे मर-मिटनेवालों को श्रद्धा-सुमन चढ़ाता हूँ
शबनम भी लिखना चाहूँ तो अंगारे लिख जाता हूँ

जिनका जीवन बलिदानों की एक छलकती गागर था
जिनका यौवन भी पौरुष का एक अमिट हस्ताक्षर था
देख अडिग निष्ठाएँ जिनकी ध्रुवतारा शर्माता था
भारत का इक-इक सेनानी दिव्य शौर्य का सागर था

जिन बेटों की चरण-धूलि पा भू पावन हो जाती थी
धवल चाँदनी जिन पर मोहित प्रेम-सुधा बरसाती थी
जिनके संकल्पों ने लक्ष्यों को इक नव-परिभाषा दी
मलय पवन भी जिनके संघर्षों के गीत सुनाती थी
अपने गीतों के चंदन का उनको तिलक लगाता हूँ
शबनम भी लिखना चाहूँ तो अंगारे लिख जाता हूँ

जिस काले पानी के भय से पत्थरदिल दहलाते थे
जिस काले पानी में गोरे पल-पल ज़ुल्म ढहाते थे
क्रान्तिकारियों पर अत्याचारों की लम्बी गाथा है
लोककथाओं में नाना जी जिसका हाल सुनाते थे

आज़ादी की आशा केवल जिनका एक सहारा था
धन-दौलत की चाह नहीं थी स्वाभिमान ही प्यारा था
काला-पानी द्वीप नहीं है हिन्दुस्थानी तीरथ है
आज़ादी के दीवानों से काला-पानी हारा था
उन बलिदानी यादों के जब मन में दीप जलाता हूँ
शबनम भी लिखना चाहूँ तो अंगारे लिख जाता हूँ

वे क्या जानें लोकतन्त्र, बस देशद्रोह की बात करें
भ्रष्टाचारी चालें चलकर चुपके से आघात करें
लोकतन्त्र की आड़ में कोई भी कुछ भी कर जाता है
लूट-पाट, घोटाले करके देशभक्ति की बात करें

लोकतन्त्र का कब मतलब है मनमाना हम काम करें
अमर शहीदों के सपनों को रुसृवा सुबहो-शाम करें
मीर जाफ़रों, जयचन्दों का ज़ोर दिखाई देता है
सरे-आम भारत की इज़्ज़त दुनिया में नीलाम करें
आस्तीन के साँपों से जब अपना वतन बचाता हूँ
शबनम भी लिखना चाहूँ तो अंगारे लिख जाता हूँ

भ्रष्टाचारी शूल बिछे क्यों लोकतन्त्र की राहों में
झूल रही क्यों न्यायपालिका भ्रष्टाचारी बाहों में
न्यायालय तो लोकतन्त्र की मर्यादा के मंदिर हैं
लेकिन न्याय बिका मिलता क्यों सरे-आम चौराहों में

हमने समझा था जिनको वे साधक हैं उजियारों के
अब लगता वे भी बैठे हैं साये में अँधियारों के

जिनको भाग्य-विधाता माना, ईश्वर से बढ़कर जाना
लोकतन्त्र के वे रक्षक अब सौदे हैं बाज़ारों के
सिसक रहे इस लोकतन्त्र को जब भी धैर्य बँधाता हूँ
शबनम भी लिखना चाहूँ तो अंगारे लिख जाता हूँ

लोकतन्त्र में ही खेला था इक तस्कर ख़ूनी दंगल
चंदन वाली खुश्बू में घुलती तूफ़ानी हलचल
लोकतन्त्र के गालों पर वीरप्पन एक तमाचा था
एक जाफ़ना बना हुआ सत्य-मंगलम का जंगल

नक्कीरन का गोपालन ही क्यों जंगल जा सकता था
वीरप्पन की माँगों का कैसेट भर कर ला सकता था
सोच रहा हूँ क्या अधिकारी अंधे, गूँगे, बहरे थे
ऐसे तो कल को वीरप्पन संसद में आ सकता था
लोकतन्त्र यदि यही तो इसकी छाया से घबराता हूँ
शबनम भी लिखना चाहूँ तो अंगारे लिख जाता हूँ

शक्ति-मन्त्र

आओ नौजवान मिलके देश को बढ़ाएँ हम
देश को बढ़ाएँ मिलके क्रान्ति-गीत गाएँ हम
क्रान्ति-गीत गाएँ पूरे राष्ट्र को जगाएँ हम

हाथ में हमारे ही तो भारती की लाज है
देवभूमि को बनाना सारे जग का ताज है
भूख, भय, ग़रीबी का न कोई अंधकार हो
और भ्रष्टाचार की भी रात तार-तार हो
जाति-पाँति, पंथ की दीवार को हटाएँ हम
आओ नौजवान मिलके...

देश का भविष्य हम हैं शत्रुओं का काल हम
राणा औ' शिवा के स्वाभिमान की मशाल हम
देश के शहीद देखते हैं आसमान से
कौन ख़्वाब सच करेगा औ' लड़ेगा शान से
इस वतन के दुश्मनों को कुछ सबक़ सिखाएँ हम
आओ नौजवान मिलके...

एटमी धमाके करके शक्ति-मन्त्र पा लिया
हम हैं शक्तिशाली सारे जग को ये दिखा दिया

विश्व की हरेक शक्ति हमको अब निहारती
आसमाँ उतारे आज भारती की आरती
शान्ति के लिए ही क्रान्ति का बिगुल बजाएँ हम
आओ नौजवान मिलके...

एकता अखण्डता का एक दिव्य-मंत्र हो
विश्व के लिये मिसाल अपना लोकतन्त्र हो
आज हमको दे रहा है वक़्त जो चुनौतियाँ
चारों ओर से उठी हैं स्वार्थों की आँधियाँ
आओ सब रुकावटों को राह से हटाएँ हम
आओ नौजवान मिलके देश को बढ़ाएँ हम

अभिनन्दन है

अभिनंदन है औ' वंदन है
नवयुग के उजियारों का
सत्यकर्म और राष्ट्रधर्म की
नैया के पतवारों का, अभिनंदन है...

अभिनंदन है आशाओं का
है अभिनंदन आस्थाओं का
जिनका तन-मन-धन अर्पित है
अभिनंदन पुण्यात्माओं का
राष्ट्रवेदी पर नित जलते जो
क्रान्ति ज्वाल विचारों का, अभिनंदन है...

अभिनंदन है शुभकर्मों का
देशभक्ति पालक धर्मों का
स्वार्थों के इस अंधकार में
अभिनंदन भावुक मर्मों का
जन-गण सेवा में जो अर्पित
नूतन नवल सहारों का, अभिनंदन है...

गीतों के बंजारे

हम ख़ुशियों के लिए भटकते फिरे सदा बाज़ारों में
मान और सम्मान ढूँढते रहे राज-दरबारों में
हम ख़ुशियों के लिए...

छलकी गीतों की गगरी तो हमने भी दो घूँट पिये
मधुशाला-सी लगी ज़िन्दगी बेशक हम दिन चार जिए
नाम लिखा जायेगा अपना गीतों के बंजारों में
हम ख़ुशियों के लिए...

समय भँवर के चक्रपाश में जब मन की नैया डोली
महल-दुमहले व्यर्थ हुए जब गीत बने कुछ हमजोली
लहर-लहर का साथ ढूँढते रहे सदा मँझधारों में
हम ख़ुशियों के लिए...

जीवन और मरण हो या फिर पाप पुण्य ने भरमाया
लाभ-हानि के हिचकोलों में जब ख़ुद को बेबस पाया
नव़ किरणों की बाट जोहते रहे सदा अँधियारों में
हम ख़ुशियों के लिए...

कभी ग्रीष्म की तपी दोपहरी कोमल तन को झुलसाया
माघ-पौष की शीत लहर ने अन्तर तक को ठिठुराया
इन्द्र धनुष के रंग ढूँढ़ते सावन की बौछारों में
हम खुशियों के लिए...

जीवन पगडण्डी पर चलते-चलते जब खो जाएँगे
वर्तमान के मोहपाश से जब अतीत हो जाएँगे
आनेवाला कल ढूँढ़ेगा हमको चाँद सितारों में
हम खुशियों के लिए...

मूरत है बलिदान की

जो अपने भारत के गौरव
मूरत हैं बलिदान की
जय जवान और जय किसान सँग
बोलो जय विज्ञान की
वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्

जो प्रहरी बन सीमाओं पर
मौत से भी लड़ जाते हैं
सींच-सींचकर ख़ून-पसीने
से माटी महकाते हैं
जो मृत्यु से लड़ जाते हैं
जो माटी को महकाते हैं
जिनके पौरुष से महके हैं
निर्जन रेगिस्तान भी
जय जवान और जय किसान सँग
बोलो जय विज्ञान की
वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्...

जिन चरणों पर शीश झुकातीं
हिमगिरि की मालाएँ
कल-कल बहते झरने-नदियाँ
गौरव-गीत सुनाएँ

जिनकी यश गाथाएँ गाएँ
जिनके गौरव गीत सुनाएँ
गूँज रही जल-थल-अम्बर में
गाथा जिनकी शान की
जय विज्ञान और जय किसान सँग
बोलो जय विज्ञान की
वन्दे मातरम् वन्दे मातरम्...

काकोरी स्मृति

शासन जब था अंग्रेज़ों का
पल-पल बढ़ते अत्याचार
बन आई थी ग़द्दारों की
बहरी अंग्रेज़ी सरकार

डाकू लूट रहे थे माँ को
जन-जन करता हाहाकार
जाग उठे कुछ नौजवान तब
करने माता का उद्धार

राम प्रसाद, बिस्मिल, अलबेला
महाबली शेखर आज़ाद
अश्फ़ाकउल्ला और बख़्शी थे
करने गोरों को बरबाद

रोशन सिंह, राजेन्द्र लाहिड़ी
क्रान्तिदूत देते ललकार,
सुनो फिरंगी भारत छोड़ो
बंद करो यह अत्याचार

मन्मथनाथ औ' मुकुन्द लाल जी
संग में भूपेन्दर सान्याल

रामकृष्ण, खत्री, दामोदर
मोर्चा बिस्मिल रहे सँभाल

साक्षात् साहस की मूरत
थे सब पौरुष के अवतार
आये थे वे देवलोक से
करने दुष्टों का संहार

इक माँ की तो ममता खींचे
दूजी माँग रही अधिकार
नहीं ललक घोड़ी चढ़ने की
फाँसी चढ़ने को तैयार

तोड़ दिये सब रिश्ते-नाते
छोड़ दिये अपने घर-बार
एक लक्ष्य बस था आज़ादी
सब थे मिटने को तैयार

मन में बैठ गई सिंहों के
और हृदय में गई समाय
काट बेड़ियाँ भारत माँ की
आओ दें आज़ाद कराय

गूँज उठा उद्घोष क्रान्ति का
काँप गई गोरी सरकार
दहल उठे थे धरती-अम्बर
सुनकर वीरों की हुंकार

बिना 'अर्थ' पर अर्थहीन सब
क्रान्ति संगठन था लाचार
दल को सबल बनाने ख़ातिर
एक योजना की तैयार

हुए इकट्ठे क्रान्तिदूत सब
काकोरी में पहुँचे आय
बनी योजना ट्रेन लूटकर
गोरों को दे सबक़ सिखाय

निर्णय कर दल की बैठक में
बिस्मिल बना दिये सरदार
टिकट ख़रीदे फिर बख़्शी ने
हो गये गाड़ी में असवार

कुछ ही दूर चली जब गाड़ी
बख़्शी खींच दई ज़ंजीर
चीं-ची कर रुक गई सिगनल पे
चेतन हुए क्रान्ति के वीर

एक हवाई फ़ायर दागा
सावधान कर दी ललकार
जो भी हिला जगह से अपनी
जायेगा यमलोक सिधार

लाहिड़ी ने चालक ललकारा
बख़्शी झपटे गार्ड पे जाय

हक्के-बक्के गार्ड औ' चालक
माऊजर देख गये घबराय

लगे माँगने भीख जान की
सीधे गिरे धरन पे आय
थर-थर दोनों लगे काँपने
जरदी गई बदन पे छाय

दौड़ पड़े अशफ़ाक औ' बिस्मिल
पास तिजोरी पहुँचे जाय
क्रान्तिदूतों ने मिल-जुलकर फिर
बक्सा नीचे लिया गिराय

देख तिजोरी चढ़ गया पारा
सुरखी गई बदन पे छाय
लेकर घन अशफ़ाक चले तब
लोह तिजोरी झपटे जाय

घनन-घनन-घन-घन बरसे घन
कस-कस कर पड़ते थे वार
गूँज उठा घननाद गगन में
पड़ती शौर्य वज्र की मार

लगी काँपने ढीठ तिजोरी
फिर चादर में पड़ी दरार
हुआ घमंड चूर गोरों का
प्रहरी देख रहे लाचार

रुपया बाँध लिया गठरी में
इक तालाब में दिया छिपाय
तितर-बितर हो गया सभी दल
अंतर्ध्यान हुए सब जाय

हलचल मच गई गली-गली में
गोरे गये सनाका खाय
नीचे का दम नीचे रह गया
ऊपर ले गया राम उड़ाय

जागृत हो गया तन्त्र पुलिस का
फैला गुप्तचरों का जाल
क़हर टूटता था जनता पर
आया निर्दोषों का काल

काकोरी की इस घटना ने
तख्त ब्रिटिश का दिया हिलाय
हाल हुआ ऐसा गोरों का
जैसे साँप छछूंदर खाय

यहाँ की बातें यहीं पे छोड़ूँ
अब लखनऊ का करूँ बखान
ग़द्दारों के कारण फँस गई
वीर देश भक्तों की जान

डेढ़ बरस तक चला मुकदमा
चौबीस मुल्ज़िम दिये बनाय

चार देशभक्तों को भइया
फाँसी की दी सज़ा सुनाय

सत्रह सितम्बर सन् सत्रह को
लाहिड़ी फाँसी दिये चढ़ाय
औ' उन्नीस सितम्बर को दी
बिस्मिल को फाँसी लगवाय

बोल-बोल के वंदे मातरम्
भारत माँ की जय-जयकार
चूम लिये फाँसी के फंदे
सपनों को करने साकार

हम ऋणी हैं, आपने सींचा लहू से यह चमन
ऐ शहीदो! आपको अर्पित हैं ये श्रद्धा-सुमन

आसमाँ के तारे

उन शहीदों को अर्पण हैं श्रद्धा-सुमन
बनने को आसमां के जो तारे गये
कह गये अलविदा-अलविदा ऐ वतन
छोड़कर याद के जो सहारे गये
कह गये अलविदा-अलविदा ऐ वतन

था सुहागिन का सिन्दूर उनमें कोई
कोई बहना की राखी की इक आस था
कोई माँ-बाप के सपनों का सारथी
कोई मासूम बचपन की इक प्यास था
खोजेंगी अब हमेशा वो नज़रें उन्हें
तोड़कर के जो रिश्ते वो सारे गये
कह गये अलविदा-अलविदा ऐ वतन...

मुड़के पीछे न देखा किसी वीर ने
खाके गोली वो सीनों पे, बढ़ते गये
मातृभूमि की रक्षा का ही लक्ष्य था
बर्फ़ की चोटियों पे भी चढ़ते गये
लिख गये वो लहू से कहानी नयी
तोड़कर ज़िन्दगी के किनारे गये
कह गये अलविदा-अलविदा ऐ वतन...

लावा बनके बहा ख़ून जिनका गरम
जिनकी हर साँस थी बस वतन के लिए
शीश झुकते थे माँ के नमन के लिए
देश भक्ति ही था एक जिनका धरम
भूलना तुम नहीं उनकी कुर्बानियाँ
भारती के जवाँ लाल प्यारे गये
कह गये अलविदा-अलविदा ऐ वतन...

ऐ! मेरे दोस्तो ऐ! मेरे हम वतन
उन शहीदों का बलिदान रुसवा न हो
आओ मिलकर चलें हम क़दम दर क़दम
उनकी रूहों को कोई भी शिकवा न हो
ले गये साथ अपने वो ग़म की घटा
देके हमको ये रंगीं नज़ारे गये
कह गये अलविदा-अलविदा ऐ वतन...

सुभाष की आस

संकट में है भारती, बाक़ी रही ना आस
दुख हरने इस देश के, आ जा वीर सुभाष

आजा रे सुभाष फिर पुकारे तेरी मैया
अँखियों में नीर ले निहारे तेरे रस्ते
आजा हँसते-हँसते मैया लेगी रे बलैया
आ जा रे सुभाष...

संसद, औ' विधानसभा आज हैं अखाड़े
सत्ता के पुजारी पढ़ें हिंसा के पहाड़े
देश-भक्ति-भाव जाने किस गली में खो गया
बजे चारों ओर भ्रष्टाचार के नगाड़े
लूट-लूट लाज पापी नाचैं ता-ता थैया
आ जा रे सुभाष...

तेरे सपनों का देश वीराना-सा हो गया
प्रेम-भाव, भाईचारा स्वार्थों में खो गया
तेरे बिना आज सारी खुशियाँ अनाथ हैं
सपने अधूरे छोड़ कैसी नींद सो गया
डूबी मझधार में वतन की ये नैया
आ जा रे सुभाष...

घायल तिरंगा हुआ, जला संविधान है
राजनीति बनी भ्रष्टाचार की दुकान है
सारा देश जात-पात भाषाओं में बँट रहा
इंडिया की धुन में तेरा खोया हिन्दुस्तान है
आजा फिर से भारती की लाज के बचैया
आ जा रे सुभाष...

दिल्ली तेरे पास आई तू क्यों दूर हो गया
लाल-किला लाल कहाँ खो गया
तेरा 'नेता' नाम भी हुआ है बदनाम अब
नेता सत्ता-सुन्दरी के नशे में ही खो गया
देश से भी ज्यादा प्यारा लगे है रुपैया
आ जा रे सुभाष...

क्रान्ति के सेनानियों की फौज़ फिर बनाना जी
कोरे कागज़ों पे खूनी हस्ताक्षर कराना जी
गहरे-गहरे घाव लगे, भारती के भाल पे
भ्रष्टाचारी, पापियों को सूली पे चढ़ाना जी
आ जा रे अवतार लेके नव युग के कन्हैया
आ जा रे सुभाष...

स्वातन्त्र्य वीर सावरकर

लहरों ने सागर से पूछा, पूछा मौन किनारों से
बेबस आँखों ने पूछा दिल्ली की मस्त बहारों से
बर्फीली चोटी ने पूछा कुर्सी वाली गर्मी से
बलिदानी पौरुष ने पूछा सत्ता की बेशर्मी से

घाट-घाट बैठे बगुलों से पूछा है मझधारों ने
हिचकोले खाती नैया से पूछा है पतवारों ने
लहू सनी सीमा ने पूछा रक्षा ठेकेदारों से
सूनी माँगों ने पूछा है मेंहदी के रखवारों से

अँधियारों के वंशज गाली देते क्यों दिनमानों को
बौने कद अपमानित करते पर्वत से बलिदानों को
अपमानों के दंशों को सहकर कैसे सम्मान लिखूँ
हर भारतवासी के दिल पर कैसे हिन्दुस्तान लिखूँ

शान्त लेखनी का संयम टूटा अन्तर में ज्वाला है
क्रोधानल छन्दों में भूषण, दिनकर संग निराला है
सावरकर की क्रान्तिसाधना शिलालेख से दूर हुई
कलम हुई बाग़ी अंगारे लिखने को मज़बूर हुई

कुछ सत्ता के सौदागर जो कुर्सी मद में ऐंठे हैं
बलिदानों को गाली देकर भी संसद में बैठे हैं
बलिदानों के कन्धों चढ़ जो खुद को बड़ा बताते हैं
स्वाभिमान के पाँव काटकर कद अपना बड़ा दिखाते हैं

ऐसे लेख हटाने वालों से भी नारियल तुड़वाओ
उनसे केवल तेरह दिन कोल्हू के चक्कर लगवाओ
पता चलेगा सेल्यूलर में कैसे दिन काटे होंगे
काल कोठरी वाली दीवारों से दुख बाँटे होंगे

फाँसी वाले फन्दे अब तक वन्देमातरम् जाते हैं
काल कोठरी वाले कुन्दे इन्क्लाब दोहराते हैं
बारह मासों ही रहती थी खुशियों की हड़ताल जहाँ
तेरह युग से काटे होंगे कैसे तेरह साल वहाँ

आजादी का निश्चय केवल जिसका एक सहारा था
धन दौलत की चाह नहीं थी स्वाभिमान ही प्यारा था
काला पानी द्वीप नहीं बस हिन्दुस्थानी तीरथ है
आजादी की गंगा लाने वाला एक भगीरथ है

बाकी सबकी तुलना ऐसी होगी काला पानी से
वंशवाद की तुलना मानो फाँसी चढ़ी जवानी से
वंशवाद के शापों को बोलो कैसे वरदान लिखूँ
हर भारतवासी के दिल पर कैसे हिन्दुस्थान

जो आजादी लाये भारत माँ के राज दुलारे हैं
जितने प्यारे बापू हमको सावरकर भी प्यारे हैं

नहीं वेदना राष्ट्रपति का होता क्यों सम्मान यहाँ
मन घायल है देख-देख बलिदानों का सम्मान यहाँ

कोई कलम नहीं चाहेगी गाँधी का अपमान लिखे
सत्य अहिंसा वाली पावन आँधी का अपमान लिखे
सच है बापू शान्ति अहिंसा की राहों के राही थे
काला पानी वाले भी तो माँ के वीर सिपाही थे

पर क्या चरखा तकली ही आजादी लाने वाले थे
क्या उनका ये देश नहीं जो शीश चढ़ाने वाले थे
याद करो जो इन्क्लाब के गीत सुनानेवाले थे
याद करो जो अंग्रेजों के दिल दहलाने वाले थे

याद करो रानी झाँसी औ' भगत सिंह की टोली को
याद करो अल्फ्रेड पार्क में शेखर वाली गोली को
दिल्ली दूर नहीं है नेता जी वाली उस बोली को
याद करो जी ज़लियाँ वाले बाग की ख़ूनी होली को

अगर चाहते हो चर्चा हो जाने दो इतिहासों पर
आजादी की देवी अब तक खड़ी हुई है लाशों पर
इतिहासों में मुड़कर देखा साज़िश के आभास मिले
कायरता को कुर्सी औ' बलिदानों को वनवास मिले

यदि सिलसिले शुरू हुए यूँ लोकतन्त्र की राहों से
वंशवाद के चिन्ह हटेंगे कितने ही चौराहों से
घोर अमावस को बोलो तो कैसे मैं दिनमान लिखूँ
हर भारतवासी के दिल पर कैसे हिन्दुस्थान लिखूँ

वतन के लिए

क़सम है गीता की हिन्दू को
मुस्लिम को है क़ुरान की
आज वतन के लिए लगा दें
बाज़ी अपनी जान की
ईसाई को 'बाइबिल' की है
सिक्खों को बलिदान की
आज वतन के लिए लगा दें
बाज़ी अपनी जान की
'वन्दे मातरम्', 'वन्दे मातरम्'!

आओ मिलकर आज भुला दें
बँटवारों की भाषा
कठपुतली बन नाच रहे क्यों
बन गये खेल-तमाशा
सिसक रहीं क्यों घायल ख़ुशियाँ
अपने हिन्दुस्तान की
आज वतन के लिए लगा दें
बाज़ी अपनी जान की
'वन्दे मातरम्', 'वन्दे मातरम्'!

डाल-डाल पर फिर से चहके
वही पुरानी चिड़िया

बन जायें सब हिन्दुस्तानी
बंगाली ना उड़िया
ना ही पंजाबी या उड़िया
लाज है रखनी हम सबको ही।
वीरों के बलिदान की
आज वतन के लिए लगा दें
बाज़ी अपनी जान की
'वन्दे मातरम्', 'वन्दे मातरम्'!

आज तिरंगा शर्मिंदा है
आबंटन, घोटालों से
उड़ी धज्जियाँ लोकतंत्र की
भ्रष्टाचारी चालों से
लूट रहे हैं सब ही छवियाँ
बलिदानी अभिमान की
आज वतन के लिए लगा दें
बाज़ी अपनी जान की
'वन्दे मातरम्', 'वन्दे मातरम्'!

चीख़ खा रही किलकारी को
कैसा मौसम आया
ममता तड़पे घूँघट घायल
बनी जवानी छाया
हर कोने से बू आती है
जलते हुए विधान की
आज वतन के लिए लगा दें
बाज़ी अपनी जान की
'वन्दे मातरम्', 'वन्दे मातरम्'!

भारत अपना नवयुग में फिर
विश्व-गुरु बन जाए
बहें देश में दूध की नदियाँ
मोहन माखन खाए
लहरा दो अब नई पताका
नवयुग के आह्वान की
आज वतन के लिए लगा दें
बाज़ी अपनी जान की
'वन्दे मातरम्', 'वन्दे मातरम्'!

प्रदूषणासुर

मिल ध्यान सृष्टि का करें सभी
निज कर से ना हो अब विनाश
अब भी ना सँभले हम मानव
हो जायेगा अस्तित्व नाश

कर रहे जिसे हम नष्ट-भ्रष्ट
उसका प्रतिशोध भयानक है
बन जाये ना मरुथल सारी
वसुधा अपना घर-आँगन है

जो जीवन हमें मिला उसके
ये वृक्ष ही जीवन दाता हैं
सच पूछो तो हर प्राणी के
ये वृक्ष पिता औ' माता हैं

मिट जाये ना अस्तित्व यहाँ
मिट जायें ना सारे प्राणी
तपती इस इस ऊसर वसुधा पर
फिर गूँजेगी किसकी वाणी

हो रहे प्रदूषित धरा-गगन
हो रहे प्रदूषित वन-उपवन

व्यापार प्रकृति का होता नित
हो रहा प्रदूषित जल जीवन

रोकें ये बाढ़ जनसंख्या की
वरदान है क्यों अभिशाप बना?
बढ़ते इस घोर प्रदूषण से
होगा सब का दूभर जीना

हम समझ रहे जिसको विकास
निश्चित विनाश की है वो राह
होगा समाप्त जीवन इक दिन
फिर अर्थहीन यह निधि अथाह

केवल भौतिक सुख के ही हित
जो महल बनाता है मानव
ऐसा लगता है मानव ये
बन जाएगा इक दिन दानव

घाटी

सिसक-सिसक रोती जब घाटी
पर्वत करते हाहाकार
अभिनंदन के गीत गूँजते
हैं क्यों दिल्ली के दरबार

तड़-तड़-तड़-तड़ चलें गोलियाँ
आँसू, आहें औ' सिसकार
दहल रही मानवता सुनकर
निर्दोषों की चीख़-पुकार

भेंट चढ़ गये उग्रवाद की
भारत माँ के लाखों लाल
बनी रहीं अंधी सरकारें
चलीं खूब शतरंजी चाल

सुबक रहा है भोला बचपन
सिसक रही है अबला नार
निर्दोषों के प्राण छीनता
कैसा ये हिंसा का ज्वार

शरणार्थी बन दर-दर भटकें
छोड़ वतन अपना घर-बार
काँटे उग आये गुलशन में
उजड़ा कलियों का संसार

जाने वो दिन कब आएगा
घाटी में होगा जब प्यार
और रुकेगा भीषण निर्मम,
हिंसक, ख़ूनी नरसंहार

विक्रमी संवत्

है हमारी संस्कृति का गान सम्वत् विक्रमी
काल-गणना की अमिट पहचान सम्वत् विक्रमी!

जिस दिवस नवरात्रि का आरम्भ होता है सदा
शक्ति की पूजा का पावन मान सम्वत् विक्रमी
काल-गणना की अमिट पहचान सम्वत् विक्रमी!

चन्द्रमा की इन कलाओं का सहस्रों साल से
कर रहा नित ही नया गुणगान सम्वत् विक्रमी
काल-गणना की अमिट पहचान सम्वत् विक्रमी!

पुष्प पंच सहस्र इक शत इन युगों की माल में
कलियुगी इस चक्र का व्याख्यान सम्वत् विक्रमी
काल-गणना की अमिट पहचान सम्वत् विक्रमी!

यह दिवस जब शून्य से प्रकटी थी मातृ-वसुन्धरा
ईश तक का बन गया उत्थान सम्वत् विक्रमी
काल-गणना की अमिट पहचान सम्वत् विक्रमी!

राम जब राजा बने यह जग प्रफुल्लित हो गया
चैत्र शुक्ला एक का आह्वान सम्वत् विक्रमी
काल-गणना की अमिट पहचान सम्वत् विक्रमी!

कहते हैं स्वाधीन पर, आधीन अपना मन अभी
आज भी नव चेतना का ज्ञान सम्वत् विक्रमी
काल-गणना की अमिट पहचान सम्वत् विक्रमी!

निज पुरातन काल-गणना का यही विज्ञान है
बन गया अब नवयुगी अभियान सम्वत् विक्रमी
काल-गणना की अमिट पहचान सम्वत् विक्रमी!

सूखते इस वृक्ष को आओ कि मिल पुष्पित करें
राष्ट्र के गौरव का देता ज्ञान सम्वत् विक्रमी
काल-गणना की अमिट पहचान सम्वत् विक्रमी!

घोलता विष पश्चिमी दानव है अपने देश में
है विनाशक बाण का संधान सम्वत् विक्रमी
काल-गणना की अमिट पहचान सम्वत् विक्रमी!

हो सुमंगल हम सभी का विक्रमी नववर्ष में
गूँजे बनकर एकता की तान सम्वत् विक्रमी
काल-गणना की अमिट पहचान सम्वत् विक्रमी!

भोर की किरण कहे

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्
ईश्वर के वन्दे हैं हम
भोर की किरण कहे
धरती और गगन कहे
ये मलय पवन कहे
नवयुगी चलन कहे
हम चलें तुम चलो
तुम चलो हम चलें
दर कदम कदम चलें
मंजिलें तो खुद ही पास आएँगी
ये दिशाएँ फिर से मुस्कराएँगी
भोर की किरन कहे
धरती और गगन कहे

नवसुरों में एकता की तान हो
भारतीयता का स्वाभिमान हो
वक्त की चुनौतियों के दौर में
दिव्य शक्तियों का आह्वान हो
तन की ये अगन कहे
साँस की तपन कहे
मन की भी लगन कहे
नवयुगी चलन कहे
हम चलें तुम चलो,

तुम चलो, हम चलें
दर कदम-कदम चले
फसलें प्यार की भी लहलाएँगी
अपना प्यारा-सा चमन सजाएँगी
भोर की किरन कहे
धरती और गगन कहे

जिन्दगी नहीं कभी भी हारती
खुद को मुश्किलों में भ सँवारती
आँधियों से लड़ते आये हम सदा
ज़लज़लों ने भी उतारी आरती
ग्रीष्म की चुभन कहे, प्यासा ये चमन कहे
पतझरी पवन कहे, पथ की ये थकन कहे
हम चलें तुम चलो, तुम चलो हम चलें
दर कदम-कदम चलें
फिर बहारें गीत गुनगुनाएँगी
बुलबुलें भी चहक-चहक गाएँगी
भोर की किरन कहे
धरती और गगन कहे

गौरव गाथा

गंगा की कल-कल सीने में
चन्दन-सी महक पसीने में
मन में मुरली की मधुर तान
तन पावनता का पुण्य दान
वाणी में कबिरा की साखी
हाथों में रामायण राखी
पावन गीता का दिव्य ज्ञान
औ कर्मयोग जीवन विधान
गीतों में दर्शन की सुगन्ध
छन्दों में पावन भक्ति गन्ध
मन्दिर की घण्टी का निनाद
या पाञ्चजन्य का शंखनाद
ये मुस्काती मालव माटी
या सत्य सनातन परिपाटी
दिन पावन, रात दिवाली है
माटी की गन्ध निराली है
जिसका इस माटी से नाता
नित रोम-रोम सबका गाता
रत्नाकर ने चरण पखारे
दिव्य हिमालय माथा है
सारे जग में अजब निराली
अपनी गौरव गाथा है
भारत माँ की गाथा है

कुछ गए छोड़ भारत माता
ज्यों नीड़ छोड़ पंछी जाता
सद् संकल्पों के संग धाये
भारतवंशी जग में छाये
संघर्षों में जीवन ढाला
पर उर में संस्कृति को पाला
सागर का सीना चीर गए
कुछ कितनी पीकर पीर गए
वे उठे गिरे गिरकर उठकर
चल पड़े लक्ष्य को ही तत्पर
जब समय चक्र भी हार गया
और व्यर्थ प्रत्येक प्रहार गया
तब अन्धनिशा का हुआ नाश
फैला वसुधा पर नवप्रकाश
श्रम-श्वेद बिन्दु धरती से मिले
मरूथल में आशा सुमन खिले
त्रिनिडाड, गयाना, फिजी ग्राम
हो मारीशस या सूरीनाम
बन गए सभी सांस्कृतिक धाम
गूँजा हर जगह राम नाम
मूल नहीं विस्मृत हो जाए
आँचल उन्हें बुलाता है
सारे जग में अजब निराली
भारत माँ की गाथा है
जो कहते भारत दीन-हीन
कायर कपूत लज्जा विहीन
उनको इतिहास सुनाता हूँ
गौरव झाँकी दिखलाता हूँ

जब जग पर तम के साये
हमने किरणों के गुण गाये
जब थे तत्व ज्ञान को पहचाना
जग ने भी विश्व गुरु माना
हमने ही शून्य का ज्ञान दिया
और दिव्य वेद वरदान दिया
अध्यात्म दिया, विज्ञान दिया
माधव बन गीता ज्ञान दिया
हम अर्थशास्त्र के उद्घोषक
ज्योतिषी योग के अन्वेषक
नालन्दा हो या तक्षशिला
मन को शिक्षा से दिया मिला
ऋषियों मुनियों के अनुगामी
मानवता के हम सहगामी
हम संस्कारों के चिरसाधक
माँ परम शक्ति के आराधक
सागर मंथन पुरुषार्थ किया
और योगक्षेम चरितार्थ किया
सेवा, सत्कार, समर्पण है
मानवता हित सब अर्पण है
जिसके आँचल में पलने को
लेता जनम विधाता है
सारे जग में अजब निराली
भारत माँ की गाथा है
ऐसा भी कालचक्र आया
संकट का घोर तिमिर छाया
नृप सत्ता मद में मस्त हुए
जन विलासिता से त्रस्त हुए

नृप अंहकार में फूल गए
पौरुष की भाषा भूल गए
वे कायरता के वस्त्र ओढ़
बन गए अहिंसक शस्त्र छोड़
तब सन्तति शौर्य विहीन हुई
संस्कृति की गरिमा हीन हुई
आक्रान्ता बन शासक आए
बेड़ियाँ दासता की लाए
घटना भीषण अनहोनी थी
भारत की दुर्गति होनी थी
होती थीं शापित द्रौपदियाँ
होती थीं क्षत्राणी सतियाँ
माता का हृदय विदीर्ण हुआ
भारत का गौरव क्षीण हुआ
संकट में सनातन धारा थी
पूरी वसुधा ज्यों कारा थी
रोती थीं नदियाँ जार-जार
घाटों को थी पीड़ा अपार
खण्डहर यह चीख-चीख गाते
ध्वंसावशेष यह बतलाते
वह था युग अत्याचारों का
कायरता के व्यापारों का
सब तीर्थ शिवाले ध्वस्त हुए
सब धर्म के दिनकर अस्त हुए
हम कितना विष पीते आए
ये इतिहास बताता है
सारे जग में अजब निराली
भारत माँ की गाथा है

वरदान बना अभिशाप

जिसको भस्मासुर की तरह तुमने सब वरदान दिये
उसने अपने ख़ूनी पंजे वापस तुम पर तान दिये
फूलों की परवाह छोड़ तुमने काँटों को सींचा था
बड़े शौक़ से सींचा तुमने काँटों भरा बग़ीचा था

दूर बैठ कर देख रहे थे साज़िश के व्यापारों को
कूटनीति की आड़ में तुमने पूजा था हत्यारों को
पर अपनी भूलों के कारण जीवन भर पछताओगे
बीज बबूलों के बोए, तो आम कहाँ से खाओगे?

तुमने सोचा भी ना होगा 'पेंटागन' हिल जाएगा
अमरीका का गौरव टावर मिट्टी में मिल जाएगा
आतंकों की आग तुम्हारे घर तक भी आ जाएगी
महाशक्ति के हरे-भरे उस गुलशन को झुलसाएगी

उग्र दरिंदे भारत में जो खेल ख़ून का खेल रहे
सोचो, कैसे दशकों से हम उग्रवाद को झेल रहे
ले विमान को जब आतंकी तालिबान के द्वार गये
मौन देखती थी दुनिया, हम कूटनीति में हार गये

तब भी तो कंधार वही था औ' अब भी कंधार वही
लेकिन आज समझ में आयी जब ख़ुद तुमने मार सही
भारत के घावों की पीड़ा अब तुम मन में लाओगे
बीज बबूलों के बोए तो आम कहाँ से खाओगे?

मुंबई में विस्फोट हुए थे लेकिन तुम कब कुछ बोले
करगिल पर जब हुआ आक्रमण तुमने होंठ नहीं खोले
बामियान में बुद्ध की प्रतिमा टूटी पर तुम शान्त रहे
केसर-क्यारी की पीड़ा से कभी नहीं आक्रान्त रहे

मासूमों की हत्याओं को जो जेहाद बताते हैं
हिंसक नारे दे-देकर नफ़रत की पौध लगाते हैं
जो शिक्षा के नाम पे बच्चों में केवल उन्माद भरें
कट्टरपंथी सोच से दुनिया के मन में अवसाद भरें

आतंकी को सँग लेकर आतंक मिटाने निकले हो
आस्तीन में साँप पालकर ज़हर मिटाने निकले हो
उग्रवाद के दावानल को कैसे भला बुझाओगे
बीज बबूलों के बोए तो आम कहाँ से खाओगे?

स्वर्ण मंदिर : एक अनुभूति

दिव्य-लोक जैसी ही छाया
उस प्राँगण मन पर छाई थी
दिव्य ताल की लहर-लहर पर
स्वर्णिम झिलमिल परछाईं थी

संगमरमरी शोभित आभा
विद्युत बल्बों से आलोकित
बीच ताल के स्वर्ण महल इक
करे आत्मा को आन्दोलित

अद्‌भुत परे कल्पना से सब
सरगम औ' प्रकाश का संगम
चित्त हो गया शान्त शून्य तब
कर अनुभव वह दृश्य विहंगम

रोमांचित हो उठी चेतना
देख भव्यता उस मंदिर की
जगमग-जगमग, झिलमिल-झिलमिल
चकाचौंध वह प्रेम-नगर की

पुलकित हुए प्राण औ' तन-मन
देखी श्रद्धा गुरु में गहरी
उतर गयी थी अन्तर्मन में
पावन 'शबदों' की सुर-लहरी

स्वर्णिम क्षण था वह जीवन का
हुई तरंगित जीवन-धारा
किया स्वर्ण मंदिर का दर्शन
हुआ हृदय में नव उजियारा

ऋतु-मिलन

ऋतुओं का यह चक्र निरन्तर
निशि-दिन घूम रहा सदियों से
शीत, ग्रीष्म और वर्षा आकर
करती आनन्दित सदियों से

हेम, वसन्त औ' पतझड़ आकर
परिवर्तन-संगीत सुनाते
समय-चक्र के साथ-साथ चल
हम भी जीवन गीत सुगाते

ग्रीष्म ऋतु निर्दयी-सी बन के
ज्यों क्रोधित होकर आयी थी
अपने अस्त्र-शस्त्र के सँग
सर्वविनाश करने आयी थी

ठहर गया था समय-चक्र ज्यों
करने महाप्रलय का दर्शन
सहमी-सी थी वर्षा रानी
कैसे होगा ऋतु-परिवर्तन

भानुकला के प्रबल तेज से
माँ वसुधा विह्वल व्याकुल थी
क्रोध चरम पर था आतप का
आकुलता बढ़ती पल-पल थी

तड़प उठा था जीव-जगत सब
सूख रहे थे वन औ' उपवन
उष्ण तीव्र बहती पवनों से
मुरझाये थे कलियों के तन

कुपित ग्रीष्म का था प्रकोप वह
ताल, कूप सब सूख चले थे
बिन पानी तड़पी हर मछली
हर तरुवर के पात जले थे

व्याकुल थे दिक्पाल सकल औ'
सारी वसुधा चीख उठी थी
तरूवर थे बेचैन, भीत-से
शीतलता भी लुटी-लुटी थी

तभी ग्रीष्म के कुपित हृदय में
एक दया का अँकुर फूटा
पहिया ऋतुओं का घूमा फिर
मानो बुरा स्वप्न हो टूटा

रोमांचित वर्षा रानी ने
अपने क़दम बढ़ाये आगे
दो ऋतुओं का मधुर मिलन तब
देखने मेंढक नींद से जागे

वर्षा रानी के स्वागत हित
प्रकृति हुई आनन्दित भारी
उमड़-उमड़ घन गरजत आये
नाचे मोर, छटा थी न्यारी

शीतल पवन तभी भर लायी
रिमझिम संदेश वर्षा का
देख उल्लसित जीव हृदय को
मन भी हर्षा था वर्षा का

हुए प्रतीक्षा के पल पूरे
मधुर मिलन की बेला आयी
आलिंगन को तभी ग्रीष्म से
वर्षा ने इक पेंग बढ़ाई

रिमझिम-रिमझिम आँसू झरते
वर्षा की आँखें नम झिलमिल
शान्त ग्रीष्माक्रोश हुआ तब
गीत प्रेम का गातीं हिलमिल

झूम-झूम वृक्षों ने किया फिर
आगन्तुक वर्षा का स्वागत
इन्द्रदेव भी आ पहुँचे थे
ले अपना वाहन ऐरावत

शनैः शनैः ले मेघों का रथ
नील गगन में बढ़े वो आगे
रजनीबाला भी आ पहुँची
और रात्रि-प्रहरी सब जागे

अति विभोर सब जलचर, थलचर
गीत खुशी के सुना रहे थे
टर-टर मेंढक ताल पे झींगुर
रून-झुन कर गुनगुना रहे थे

ऋतुओं के इस खेल में पाया
जीवन का अद्भुत नव अनुभव
नृत्य कर उठा मन मयूर सम
सुनकर मनमोहक खग-कलरव

शीतलता थी मुझे सुहाती
मादक मौसम मुझे लुभाता
इसके आगे की दुख गाथा
सुनो बन्धु मैं तुम्हें सुनाता

रात अँधेरी, स्वच्छ गगन था
झिलमिल तारे चमक रहे थे
इक समूह में चन्द सितारे
इक आभा से दमक रहे थे

लोक कल्पना में उड़ने को
मन पंछी ने पर फैलाए
तभी एक तारा छूने को
मैंने कल्पित हाथ बढ़ाए

इक नक्षत्र जिसे चाहा था
मुझसे वो भी दूर हो गया
और अन्तरिक्ष की गहराई में
छोड़ अकेला कहीं खो गया

तभी ज़ोर से हँसे सितारे
शायद मेरी नादानी थी
भूले से जिस राह चला था
राह वो बिलकुल अनजानी थी

वे बोले, संदेश हमारा
हर वसुधा-वासी से कहना
धरा पे रहनेवाले मानव
सीखो सीमाओं में रहना

नक्षत्रों का यह संदेशा
पहुँचा केवल मेरे मन तक
कर्णहीन था हृदय बेचारा
उसके पीछे गया गगन तक

गोकुल है बेहाल

क्या बतलाऊँ मैं तुम्हें गोकुल का अब हाल
कान्हा तेरे वियोग में गोकुल है बेहाल

ओ कन्हैया नंदलाल
ओ यशोदा जी के लाल
राह निहारें नित-नित तेरी
यमुना पर सब ग्वाल
ओ कन्हैया नन्द लाल, कान्हा रे!

अँखियों में भर नीर बिलखते
गोकुल के नर नारी रे
और गोपियाँ बन गईं बिरहन
जागें रतियाँ सारी रे
याद में तेरी बीत रहे दिन
ज्यों बीतत हैं साल
ओ कन्हैया नन्द लाल, कान्हा रे!

बरसत राधा के नयनों में
सावन की रुत आयी रे
करें ठिठोली सखी न अब
कोमल काया कुम्हलायी रे
सुने ना कोई ब्रह्मज्ञान सब

फँसे प्रेम के जाल
ओ कन्हैया नन्द लाल, कान्हा रे!

बछियाँ रोतीं, बछड़े रोते
रोतीं तेरी गइया रे
बैरागी हो गये नन्द बाबा
गुमसुम तेरी मइया रे
भूल चले हैं ग्वाल बाल भी
वो मस्तानी चाल
ओ कन्हैया नन्द लाल, कान्हा रे!

सूने-सूने यमुना के तट
सूनी कदम्ब की छैयाँ रे
साँझ ढले अब जसुमति मैया
किसकी लेय बलैयाँ रे
सूनी-सूनी कुंज गली रे
मनसुख है बेहाल
ओ कन्हैया नन्द लाल, कान्हा रे!

सूख चले हैं लता वृंद सब
कली कुसुम मुरझाये रे
कोकिल भई उदास, पपीहा
अब ना गीत सुनाए रे
और मूयरा नृत्य करे ना
मृग भी भूले चाल
ओ कन्हैया नन्द लाल, कान्हा रे!

सूनी-सूनी बृज की गलियाँ
फागुन नाहिं सुहाए रे
ग्वाल-बाल-गोपियों को कान्हा
होली कौन खिलाये रे
प्रेम-रंग बिन तेरे कान्हा
फीके रंग-गुलाल
ओ कन्हैया नन्द लाल, कान्हा रे!

छोड़ के तन सबके गोकुल तुम
मनवा सँग ले आये रे
कान्हा तेरे बिन गोकुल में
बिरहा बादल छाये रे
पूछ रहे इक-दूजे से
कब लौटेंगे गोपाल
ओ कन्हैया नन्द लाल, कान्हा रे!

महावीर वंदना

कलियुग-तम घनघोर है, मानवता है अधीर
बनकर सूरज ज्ञान का, आ जाओ महावीर

वर्द्धमान महावीर
धीर-वीर महावीर—भगवन् रे!
सत्य अहिंसा की नदिया का
सूख चला अब नीर
वर्धमान महावीर—भगवन् रे!

वर्द्धमान हे! तृषलानंदन
वीतराग फिर आओ जी
भारत के सोये जन-जन को
तन्द्रा तोड़ जगाओ जी
जलता है जग आन बहाओ
शीतल मलय समीर
वर्धमान महावीर—भगवन् रे!

हे! अखिलेश्वर वीर प्रभु तुम
तीर्थंकर अविनाशी जी
प्रेम सिन्धु हे! दया सिन्धु तुम
जन-जन के घट वासी जी
हुई विषैली प्रेम की गंगा

पल-पल बढ़ती पीर
वर्धमान महावीर—भगवन् रे!

आप अहिंसा के अवतारी
शाश्वत प्रेम-पुजारी जी
बिना आपके हैं अनाथ से
भारत के नर-नारी जी
पार उतारो भवसागर से
तोड़ो हर ज़ंजीर
वर्धमान महावीर—भगवन् रे!

सूर्य-ग्रहण

देख रहे सब सूर्य ग्रहण को
कोटि-कोटि जन नील गगन में
नहीं देख पाया कोई, जो
ग्रहण लगा मेरे जीवन में

तुम सूरज मेरे जीवन के
हृदय-लोक उजियारा करते
मधुर मृदुल शब्दों में अपने
जीवन के सब दुखड़े हरते

कभी अहं बनकर के चन्दा
ढँक देता है तेज तुम्हारा
हे! प्रियवर मेरे जीवन में
उस क्षण छा जाता अँधियारा

हो जाता हूँ तब निराश मैं
और विकल होता मन-पंछी
सूर्योदय की आस लगाए
थककर है सोता मन-पंछी

शून्य और सृष्टि

शून्य में से शून्य घटकर
शून्य ही रहता है शेष
है समायी सृष्टि जिसमें
शून्य की महिमा विशेष

शून्य से होकर प्रकट सब
शून्य में मिलता सदा
सब रहस्यों की धरा पर
शून्य ही खिलता सदा

शून्य की आकृति में ही
रवि-शशि सभी नक्षत्र हैं
और ये जल-बिन्दु भी सब
शून्य के ही पत्र हैं

शून्य में जब शून्य जोड़ा
शून्य ही परिणाम है
शून्य का आकार है
जिसका कि वसुधा नाम है

शून्य था सीपी के भीतर
शून्य से इक बूँद आयी

बनके मोती शून्य रूपा
बूँद ने पहचान पायी

हैं व्यवस्थित शून्य में
तारे असंख्य निहारिकाएँ
धूमकेतु हो कि उल्का
शून्य के चक्कर लगाएँ

ओस की हर बूँद प्रातः
करती मानव ओर इंगित
अहंकारी जीव तेरा
शून्य से अस्तित्व निर्मित

कर गुणा शून्य में शून्य
शून्य ही है शेष बचता
मानकर सिद्धांत इसको
ईश भी यह सृष्टि रचता

शून्य सागर ले हिलोरें
डूबकर मिलती है राहत
हैं सभी बेचैन, सबको
शून्य को पाने की चाहत

नेति-नेति मुनि कह गये सब
शून्य शाश्वत औ' सनातन
विश्व के निर्माण से भी
शून्य का उद्भव पुरातन

है अँधेरा शून्य का गुण
शून्य उद्गम ज्योति का
शून्य हर पल दे रहा है
ज्ञान ध्वनि के स्रोत का

तत्व वह परमात्म इक है
शून्य भी जिसमें समाया
कोई बिरला ही जगत में
शून्य को पहचान पाया

समझ लेंगे हम इसे जब
शान्ति यह मन पायेगा
करके पीछा शून्य का तो
शून्य में मिल जायेगा

हैं परे जो इन्द्रियों से
तत्व का तुम ज्ञान दो
छीनकर अज्ञान मेरा
अब मेरी पहचान दो

आ रही हर पल से
यह मधुर आवाज़ है
कोई तो मुझको बताए
कौन-सा वह साज़ है

दो मुझे वह ज्ञान जिससे
शून्य को मैं जान पाऊँ
पीके अमृत ज्ञान अब
शून्य से मैं पार जाऊँ

बंधन

हैं बंधन अदृश्य, बँध रहे
जिसमें चाँद-सितारे
नाम दिया है प्रेम का जिसमें
बँधते हृदय हमारे

कण-कण में है सृष्टि सँजोए
जिसका सूक्ष्म स्पंदन
हो प्रेरित जिससे करती है
लता वृक्ष-आलिंगन

जिससे प्रेरित रवि वसुधा का
आकर तिमिर हटाता
झिलमिल सतरंगी किरणों से
जग को नित्य जगाता

जिसके कारण नदिया भी
मिल जाती हैं सागर से
आओ मन का प्याला भर लें
उसी प्रेम-गागर से

हुआ प्रेम जब जड़-चेतन का
जीव जगत का अंग बना
वृक्षों ने पायी हरियाली
औ' पुष्पों का रंग बना

खग-कलरव वसुधा में गूँजा
प्रेम-पुष्प की कली खिली
सप्त सुरों के सिंचन से तब
मन-वीणा को तान मिली

कहीं चकोरी ने टेरा
अपने चकोर प्रियतम को
कुहुक-कुहुक कोकिल भी करती
उद्वेलित तन-मन को

प्रेम-पाश में बँधी गोपियाँ
उस नटखट नागर से
आओ मन का प्याला भर लें
उसी प्रेम-गागर से

प्रेमाश्रु की गंगा

प्रेम अश्रु की बहती गंगा जो भी कर लेता स्नान
स्वार्थ रहित होकर वह जीता, मानव बन जाता भगवान

बहती है जो हृदय-देश से पावन करती तन-मन को
बैठ किनारे रह जाते जो व्यर्थ गँवाते जीवन को
स्वार्थ, कपट, छल की बाधाएँ पार नहीं जो कर पाते
द्वेष, ईर्ष्या, अहंकार की आग में मानव जल जाते
प्रेम अश्रु की शीतल धारा पावन करती तन-मन-प्रान
स्वार्थ रहित होकर वह जीता, मानव बन जाता भगवान

इस धारा में भेद नहीं है जात, पात औ' भाषा का
ढाई अक्षर की सुर-लहरी, है अंकुर चिर आशा का
गाता है कण-कण ब्रह्माण्ड का जिसकी गाथाओं के गीत
फूट रहा कोमल कलियों से जिसका वह शाश्वत संगीत
मानव वही जो करता नित-नित, पल-पल प्रेम-सुधा का पान
स्वार्थ रहित होकर वह जीता, मानव बन जाता भगवान

यही भक्ति का पावन रस है और यही अमृत धारा
राम-नाम का सार यही है यह मीरा का इकतारा
कोटि-कोटि सुर, नर, मुनियों ने इस अमृत का पान किया
युगों-युगों से मानवता को अमर प्रेम का दान दिया
देते हैं संदेश प्रेम का गीता, बाइबल और कुरान
स्वार्थ रहित होकर वह जीता, मानव बन जाता भगवान

जीवन क्षणभंगुर मानव तू प्रेम के गीत सुनाए जा
पग-पग पर इस जीवन के तू प्रेम-सुधा छलकाए जा
कपट स्वार्थ है पाप जगत में प्रेम का पुण्य कमाये जा
जिनको ठुकराता जग सारा उनको गले लगाये जा
सत्यकर्म है छुपा हुआ जिसमें इस वसुधा का कल्यान
स्वार्थ रहित होकर वह जीता...

ना नदियाँ थीं, ना सागर था वसुधा पर वीराना था
धरा अकेली दुखी विचरती कोई नहीं पहचाना था
पड़ी दृष्टि तब परम पिता की करुणा का इक ज्वार उठा
बह निकली थी अश्रु की गंगा उससे था सागर ये बना
फूट पड़ा फिर जीवन अंकुर ईश्वर ने पायी पहचान
स्वार्थरहित होकर वह जीता...

मानव-दंश

कहा सपेरे ने साँपों से, व्यर्थ हुए बदनाम यहाँ
तुमसे ज्यादा डसते हैं इन्सानों को इन्सान यहाँ

अपना प्यारा भारत सोने की चिड़िया कहलाता था
सत्य, अहिंसा और धर्म से यहाँ सभी का नाता था
उजड़ गया सारा गुलशन, आया कैसा तूफ़ान यहाँ
तुमसे ज्यादा डसते हैं इन्सानों को इन्सान यहाँ

झुलस रही बेबस मानवता जात-पात की ज्वाला में
साबुत बचा न कोई मोती स्वाभिमान की माला में
शीश चढ़ा पूजा करते थे अब वे श्रद्धावान कहाँ
तुमसे ज्यादा डसते हैं इन्सानों को इन्सान यहाँ

सिंहों की धरती पर अब तो बनती बात सियारों की
अम्बर तक से वर्षा होती है देखो हथियारों की
सोने-चाँदी के सिक्कों में बिकता है ईमान यहाँ
तुमसे ज्यादा डसते हैं इन्सानों को इन्सान यहाँ

हृदय-देश के दुख का झरना फूट निकलता नयनों से
दहक रहा अन्तर में का लावा पल-पल बहता नयनों से
खुद पी जाऊँ विष, मंथन का कर दूँ अमृत-दान यहाँ
तुमसे ज्यादा डसते हैं इन्सानों को इन्सान यहाँ

जन संकल्प

जन-जन हो शिक्षित भारत का
यह संकल्प उठाएँ हम
नयी सदी नवयुग में मिल-जुल
ज्ञान के दीप जलाएँ हम

शिक्षा ही मन के आँगन में
अमर उजाला करती है
नयी चेतना नयी दिशा भी
मन में नित-नित भरती है
बच्चे, बूढ़े या जवान हों
शिक्षा-गीत सुनाएँ हम
नयी सदी नवयुग में मिल-जुल
ज्ञान के दीप जलाएँ हम

गाँव-गाँव औ' नगर-नगर में
शिक्षा का अभियान चले
सौ करोड़ का अपना भारत
शिक्षित सीना तान चले
विश्व गुरु बन सारे जग को
फिर से पाठ पढ़ाएँ हम
नयी सदी नवयुग में मिल-जुल
ज्ञान के दीप जलाएँ हम

वह दीनानाथ स्वरूप कहाँ

क्यों सुबक रहा भोला बचपन
क्यों सिसक रही अबला नारी
क्यों प्रीत बनी दुर्लक्ष्य स्वप्न
औ' प्रेम बन गया व्यभिचारी

उठ रहे बवंडर स्वार्थों के
उजड़ा वन-उपवन भावों का
मानव से डरता है मानव
व्यापार हो रहा घावों का

डरतीं अब कलियाँ खिलने से
भँवरे भी भूल गए गुंजन
डर-डर बसंत पग बढ़ा रहा
कैसे अब सृष्टि का हो वंदन

अनमोल रत्न जो वसुधा का
बिकता है सस्ते दामों पर
हम समझे थे अवतार जिन्हें
अब प्रश्न चिह्न उन नामों पर

गीतों में भी अब क्रंदन है
चहुँ ओर मृत्यु का अभिनंदन
क्यों शोक सभाएँ गली-गली
क्यों हत्यारों का भी वंदन?

राहों में कंटक बिछे हुए
हर मोड़-मोड़ छीना-झपटी
हैं लोभी ताले हृदयों पर
रक्षक बन गये भक्षक कपटी

जो सुने करुण क्रंदन शिशु का,
अब ममता का वह रूप कहाँ
दारुण दुख दीनों के हर ले
वह दीनानाथ स्वरूप कहाँ

सम्बन्धों से डर लगता है

अपना प्यारा घर लगता है
यूँ तो सारा जग ही मुझको
करना माफ़ मुझे पर यारो
सम्बन्धों से डर लगता है...

चाहत है चंदन बन महकूँ
नित जीवन बगिया महकाऊँ
पर कैसे समझाऊँ मन को
अब गंधों से डर लगता है
करना माफ़ मुझे पर यारो...

प्रीत-रीत की पावन बेदी
तन-मन-धन सब कुछ न्यौछावर
नहीं बाँधना पर बंधन में
अनुबन्धों से डर लगता है
करना माफ़ मुझे पर यारो...

एक बूँद हूँ पर अन्तस् में
मैंने सागर को पाया है
बनने को सागर बन जाऊँ
तटबंधों से डर लगता है
करना माफ़ मुझे पर यारो...

दोहा-सागर

ज्ञान सखा परदेस में, ज्ञान ही सच्चा मीत
भवसागर तर जाये मन, करे ज्ञान संग प्रीत

दोहे

बूँद-बूँद है कर रही, सागर का गुणगान
औरों के जो दुख हरे, जग में वही महान

आग लगी पाताल में, धूम्र चढ़ा आकाश
मछली प्यासी मर रही, कौन बुझाए प्यास

गीत लिखे औ' फिर लिखे, पुस्तक दई बनाय
युग बदले मौसम गये, सार समझ ना आय

मानव मन की भूख का, कोई आर न पार
सारे जग को खा गई, तब भी हाहाकार

गुल खिलते गुलशन बना, पतझड़ दिया भुलाय
समय चक्र के पाट में, हर मौसम पिस जाय

परिवर्तन संसार में, शाश्वत परम विधान
बंधन में जिसके बँधे, सुर, नर, सकल जहान

मन में धीरज राखिए, धैर्य धर्म का मूल
बिना धैर्य उपजे सदा, मानव हिय में शूल

रामायण, गीता पढ़ीं, बाइबल और कुरान
मिला नहीं व्यवहार में, फिर कैसा ये ज्ञान

कबिरा, तुलसी, जायसी, सूरदास, रसखान
गायी महिमा ब्रह्म की, मिटा सकल अज्ञान

माँ दुर्गा साकार है, महिमा सभी सुनाएँ
ममता की गंगा बहै, सुर, नर, मुनि तर जाएँ

मन का पंछी बावरा, उड़-उड़ व्याकुल होय
मोहन कब लौटें सखी, तनिक बता दे मोय

कालचक्र के साथ ही, उलटा सकल विधान
तन्त्र विलासी हो गया, लोक करे विषपान

अक़्ल बड़ी या भैंस यह, प्रश्न एक श्रीमान
बोले संसद तक चलो, तुरत पड़ेगा जान

बदली लेकर आ गयी, क्यों सावन संदेस
तड़पत हूँ बिरहन बनी, पिया बसे परदेस

नैना सावन बन गये, मन में मेघ विषाद
बिजली बन हँसती रही, प्रियतम तेरी याद

फूलों में रस ना रहा, कली रहीं मुरझाय
माली सौदागर बने, उपवन दिया सुखाय

भ्रष्टाचारी दौर से गुजर रहा यह देश
चाँदी का जूता पड़े मिटते सकल कलेश

तन बेचा, मन भी बिका और बिका ईमान
इन्सानों ने देखिए, बेच दिया भगवान

जलियाँवाला बाग़ भी, छोड़ चला उम्मीद
रो-रो कर कहता यही, हो ना कोई शहीद

बहती आँधी स्वार्थ की, गुलशन दिया उजाड़
फाल्गुन सँग बस आग है, सावन संग चिंघाड़

शब्द अगर बनकर रहें, हर पल भाव प्रधान
शब्द ब्रह्म बन गूँजता, तब हर शब्द महान

सुर से सुर मिलता नहीं, गीत हुए बदनाम
बंसी की धुन लाओ अब ओ मेरे घनश्याम

लुटे-लुटे जंगल सभी, लुटे-लुटे से गाँव
लील गये ऊँचे भवन, वह अम्बुआ की छाँव

शहरों का साम्राज्य है, बौने होते गाँव
प्यास लौटती कूप से, थके-थके हैं पाँव

किसका यह गुणगान है, कैसा गौरव-गान
भूख करे तांडव यहाँ, सस्ती बिकती जान

ऐसी जर्जर हो गयी, दरवाजे की टाट
लगी झाँकने बीच से, टूटी-फूटी खाट

ब्रह्मा, विष्णु सो गये, शिव हैं अन्तर्धान
गूँज रही संसार में, नेताओं की तान

मोती चुगते काक अब, हंसों को वनवास
पहरा देती लोमड़ी, वीराना मधुमास

रात अमावस की यहाँ, नहीं रहेगी शेष
करें प्रतीक्षा धैर्य से होगी भोर विशेष

प्रेम डगर कंटक बिछे, पी की नगरी दूर
माँग भरें कब साजना, पूछ रहा सिंदूर

साँठ-गाँठ का दौर है, बदल रहे दिन-रात
मानव चतुर सुजान को, मूरख देते मात

दाँव-दाँव की बात है, दाँव है माया जाल
दाँव लगे राजा बने, दाँव पड़े कंगाल

जनसंख्या के पेट में, समा रहे, वन, गाँव
प्यासा पनघट से मुड़े, थके-थके से पाँव

राम-राम तोता रटे, अर्थ ना जाने जीव
लाख करो तप साधना, भाव बिना निर्जीव

ज्ञान सखा परदेस में, ज्ञान ही सच्चा मीत
भवसागर तर जाये मन, करे ज्ञान संग प्रीत

ब्रह्म कलश जब छलकता, बहे ज्ञान की गंग
भीगे मन-चुनरी अजब, चढ़े प्रेम का रंग

मधुबन से भँवरे करें, सदा यही अनुबंध
रस-पराग बस चाहिए, ना चाहें हम गंध

चंचल शीतल चाँदनी, यौवन का भंडार
निशा संग करती रही, लहरों का शृंगार

❖❖❖

गजेन्द्र सोलंकी

पिता : स्व. श्री हरीचन्द सोलंकी

माता : श्रीमती देवकी सोलंकी

जन्मतिथि : 31 दिसम्बर

जन्मस्थान : आगरा

शिक्षा : स्नातक (मेरठ विश्वविद्यालय)

प्राप्तियाँ :

- सलाहकार सदस्य-केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड (फिल्म सेन्सर बोर्ड) सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार वर्ष 1999 से 2003 तक
- हिन्दी सलाहकार समिति सदस्य-केन्द्रीय श्रम मंत्रालय भारत सरकार, वर्ष 2002 से 2004 तक
- सूरीनाम में आयोजित 'सातवें विश्व हिन्दी सम्मेलन में भारत सरकार की ओर से सक्रिय भागीदारी

काव्य यात्राएँ : ब्रिटेन (यू. के.), फ्रांस, त्रिनिडाड एवं टोबैगो, सूरीनाम, नेपाल

सम्पर्क : 203-ए, डब्ल्यू. पी. ब्लॉक मौर्य एन्कलेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110 088

दूरभाष : घर 011-27443460
मो. 09811137873, 09868236823